

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन

॥ विजानमुपास्व ॥

National Mission for Manuscripts

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन

National Mission for Manuscripts

२५
ना-३७
२४



पन्द्रहवें वर्ष का प्रतिवेदन 2017-18

Report of the Fifteenth Year 2017-18

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन

॥ विज्ञानमुपास्य ॥

National Mission for Manuscripts

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन

पन्द्रहवें वर्ष का प्रतिवेदन

2017-18

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन

वार्षिक प्रतिवेदन 2017-18

भारत साधिकार दावा कर सकता है कि उसके पास विश्व का विशालतम पाण्डुलिपि भण्डार है। भारत के पास न केवल साहित्यिक विरासत का विशालतम भण्डार है अपितु यह पाण्डुलिपि संरक्षण प्रयास में अग्रणी है। राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन पाण्डुलिपि संरक्षण और उसमें निहित ज्ञान के प्रसार हेतु राष्ट्रीय स्तर पर किया गया विश्व में प्रथम समेकित प्रयास है। राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन ने 2003 में अपनी स्थापना से लेकर अभी तक "भविष्य के लिए अतीत का संरक्षण" के अपने आदर्श को पूरा करने हेतु एक लम्बी यात्रा तय की है। यह देश भर में फैले अपने सौ से अधिक उपकेन्द्रों के माध्यम से कार्य निष्पादित करता है।

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन सम्पूर्ण देश में स्थापित विभिन्न प्रकार के केन्द्रों के माध्यम से कार्य करता है। संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार द्वारा अपनी स्थापना के लगभग एक दशक बाद यह संस्था देश में हुए विरासत संरक्षण प्रयासों के बीच निःसन्देह रूप से सर्वाधिक लोकप्रिय एवम् प्रभावी आन्दोलन के रूप में उभरकर सामने आई है। तीसरे चरण में रा.पा.मि. में कई गतिविधियों को नाना रूपों में विस्तारित किया गया है।

विगत वर्षों के दौरान रा.पा.मि. ने स्वयं को अधिक सापेक्ष तथा प्रभावी बनाने के लिए अपनी प्राथमिकताओं को पुनः समायोजित किया है। इनमें से कुछ प्रशंसनीय कार्य इस प्रकार हैं – पूर्वोत्तर और दूरस्थ क्षेत्रों में रा.पा.मि. के कार्य का विस्तार

तथा मध्यकालीन बौद्धिक विरासत पर उचित जोर देना प्रशंसनीय है। एक दशक के लम्बे अनुभव से यह स्पष्ट हो गया है कि पाण्डुलिपियों के सर्वेक्षण की गतिविधियाँ एक प्रयास में ही पूरी नहीं की जा सकती। यह एक निरन्तर प्रक्रिया है और इसे स्थायी संस्थान के द्वारा निरन्तर बेहतर तरीके से उन्नतिशील बनाया जा सकता है। इसलिए पाण्डुलिपियों का सर्वेक्षण पाण्डुलिपि संस्थान केन्द्रों के सुपुर्द किया गया है जो सर्वेक्षण गतिविधियों द्वारा प्रलेखन की जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिए भी उत्तरदायी हैं। इस निर्दर्शनात्मक बदलाव के साथ 2014 में रा.पा.मि. का चतुर्थ विस्तार आरम्भ किया गया था।

संरक्षण और आधुनिकीकरण पर जोर पाण्डुलिपि संरक्षण हेतु रा.पा.मि. की एक द्वि-मुखी योजना है – (क) मूल पाण्डुलिपियों के उपचारात्मक एवम् निवारणात्मक संरक्षण, और (ख) सांख्यिकीकरण के माध्यम से संरक्षण।

यह एक विदित तथ्य है कि रा.पा.मि. के अस्तित्व में आने से पूर्व स्वतन्त्र भारत में मौजूद पाण्डुलिपि भण्डार में लगभग आधी पाण्डुलिपियाँ नष्ट हो गई थीं। अतएव रा.पा.मि. के कार्य में संरक्षण को समुचित सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई। अपने साधन-सम्पन्न पा.सं.के. के माध्यम से पाण्डुलिपियों के संरक्षण के साथ-साथ रा.पा.मि. पाण्डुलिपि संरक्षण एवम् संरक्षण कला व विज्ञान में लोगों को प्रशिक्षित करने हेतु कार्यशालाओं का आयोजन

करता है। सन् 2011 में रा.पा.मि. ने अपने नई दिल्ली स्थित मुख्यालय में संरक्षण प्रयोगशाला को प्रारम्भ किया है। इस प्रयोगशाला में वर्तमान में तीन सुप्रशिक्षित संरक्षक कार्यरत हैं, हालांकि जितने संरक्षकों की आवश्यकता है, उसकी तुलना में तीन लोगों का होना बहुत कम है।

परिरक्षण हेतु आधुनिक तकनीकी के इस्तेमाल को रा.पा.मि. द्वारा तैयार एवम् प्रकाशित "अभिलेखीय सामग्री के सांख्यिकीकरण हेतु दिशा-निर्देश" में परिभाषित किया गया है। इसका मुख्य उद्देश्य भविष्य के लिए पाण्डुलिपि संरक्षण हेतु डिजिटल प्रौद्योगिकी का उपयोग करना है। राष्ट्रीय एवम् अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सांख्यिकीकरण परियोजनाओं से सम्बन्धित सर्वोत्तम प्रयासों से जुड़े विशेषज्ञों के साथ काफी विचार-विमर्श करने के बाद रा.पा.मि. ने यह सामग्री प्रकाशित की। यह अपने तरह की देश में पहली पुस्तिका है। सांख्यिकीकरण प्रयास का उद्देश्य पाण्डुलिपियों को भविष्य के लिए सुरक्षित रखना तथा राष्ट्रीय डिजिटल पाण्डुलिपि पुस्तकालय की स्थापना करके पाण्डुलिपियों को सहज रूप से देख पाने की सुविधा उपलब्ध कराना है। रा.पा.मि. ने सन् 2014 में सांख्यिकीकरण परियोजना का चतुर्थ घरण प्रारम्भ किया जिसके तहत अस्सी लाख पृष्ठ पाण्डुलिपियों के सांख्यिकीकरण करने की योजना है। प्रथम, द्वितीय और तृतीय घरणों सहित अभी तक 1.85 करोड़ पृष्ठ पाण्डुलिपियों का सांख्यिकीकरण किया जा चुका है। वर्तमान में रा.पा.मि. के पास पाण्डुलिपियों की 1.85 करोड़ पृष्ठ की डी.वी.डी. छवि उपलब्ध है।

रा.पा.मि. एक संरक्षण माध्यम के रूप में

सांख्यिकीकरण की रीमाओं से परिचित है। जहाँ सांख्यिकीकृत प्रतियाँ सुविधापूर्वक उपलब्ध हो सकती हैं, वहीं परिवर्तनशील प्रौद्योगिकी के इस युग और डी.वी.डी. के सीमित जीवन-अवधि को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि सांख्यिकीकृत प्रतियाँ दीर्घ-अवधि परिरक्षण का साधन नहीं हो सकती अतएव, रा.पा.मि. ने सभी सांख्यिकीकृत पाण्डुलिपियों का माइक्रोफिल्म तैयार कर उन्हें सुरक्षित रखने की योजना बनाई है।

संक्षेप में, रा.पा.मि. का उद्देश्य पाण्डुलिपियों में निहित ज्ञान को सुरक्षित रखना तथा वर्तमान सन्दर्भ में उनका अधिकतम उपयोग करना है। इस लक्ष्य को पाने के विभिन्न साधन हैं – प्रलेखन, संरक्षण, सांख्यिकीकरण और प्रसारण।

देश के विभिन्न भागों में पाण्डुलिपियों, पाण्डुलिपि-शास्त्र और पाण्डुलिपियों में निहित ज्ञान के सम्बन्ध में संगोष्ठियाँ और व्याख्यान आयोजित किए जाते हैं। विगत वर्षों के दौरान तत्त्वबोध सार्वजनिक व्याख्यानमाला के अन्तर्गत दिए गए व्याख्यानों को संकलित कर कई पुस्तकों प्रकाशित की गई हैं। संगोष्ठी आलेखों, पाण्डुलिपियों के विवेचनात्मक संस्करण और दुर्लभ अप्रकाशित पाण्डुलिपियों की भी कई पुस्तकों प्रकाशित की गई हैं और अनेक पुस्तकों को प्रकाशित करने की प्रक्रिया चल रही है। इसके साथ ही रा.पा.मि. की वेबसाइट (www.namami.gov.in) पर 31,23,000 पाण्डुलिपियों के बारे में सूचना उपलब्ध है।

विगत वर्षों के दौरान इस सम्बन्ध में व्याख्यानों,

संगोष्ठियों और कार्यशालाओं के माध्यम से प्रसार के कार्य में कई गुना बढ़ोतारी हुई है।

पाण्डुलिपियों में विगत हज़ारों वर्षों से हमारे देश में संचित ज्ञान का भण्डार निहित है। भारत के बौद्धिक

सम्मान को बनाए रखने के लिए इस बात की आवश्यकता है कि हम इसे वर्तमान सन्दर्भ में फलदाई एवम् लाभकारी बनाएं।

उद्देश्य

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन की स्थापना का उद्देश्य भारत और विदेश में स्थित सभी भारतीय पाण्डुलिपियों की पहचान, प्रलेखन और संरक्षण करना है। इन कार्यों के दायित्व लेने के पीछे पाण्डुलिपियों तक पहुँच को आसान बनाना, सांस्कृतिक विरासत के प्रति जागरूकता बढ़ाना और शैक्षणिक तथा अनुसन्धान कार्य हेतु इसका उपयोग करना है। मिशन के उद्देश्यों को निम्नलिखित श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है –

उद्देश्य 1

प्रशिक्षण, जागरूकता के साथ-साथ पाण्डुलिपियों के संरक्षण और परिरक्षण की सुविधा उपलब्ध कराना।

उद्देश्य 2

जहाँ कहीं भी भारतीय पाण्डुलिपियाँ उपलब्ध हों, उनका प्रलेखन और सूचीकरण करना, उनके सम्बन्ध में सही और अद्यतन सूचना रखना तथा अवलोकन के लिए प्रस्तावित परिस्थिति की जानकारी रखना।

उद्देश्य 3

प्रकाशन और इलेक्ट्रॉनिक, दोनों रूपों में पाण्डुलिपियों को उपलब्ध कराकर उन तक आसानी से पहुँच को बढ़ावा देना।

उद्देश्य 4

भारतीय भाषा और पाण्डुलिपि शास्त्र के अध्ययन में शोध और प्रकाशन को बढ़ावा देना।

उद्देश्य 5

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि पुस्तकालय का निर्माण करना।

कार्यक्रम और गतिविधियाँ

1. प्रलेखन

- पाण्डुलिपि के राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक डाटाबेस को सम्पन्न बनाना।
- पाण्डुलिपि का राष्ट्रीय सर्वेक्षण तथा सर्वेक्षणोत्तर कार्यक्रम।
- पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्रों (एम.आर.सी.) का विस्तार और सशक्तिकरण।
- पाण्डुलिपि सहयोगी केन्द्रों (एम.पी.सी.) को सहयोग।

2. पाण्डुलिपि संरक्षण और प्रशिक्षण

- एम.सी.सी. नेटवर्क में विस्तार।
- पाण्डुलिपि संरक्षण सहयोगी केन्द्रों (एम.सी.पी.सी.) की स्थापना।
- संरक्षणों के राष्ट्रीय संसाधन दल की स्थापना।
- शोध कार्यक्रमों को बढ़ावा।
- निरोधात्मक संरक्षण में प्रशिक्षण का समावेश।
- दुर्लभ सहयोग सामग्रियों के संरक्षण हेतु कार्यशाला।
- एम.सी.पी.सी. कार्यशाला।
- क्षेत्र प्रयोगशालाओं की स्थापना।
- एम.आर.सी. में पाण्डुलिपि संकलन का संरक्षण।
- सर्वेक्षण में तथा परवर्ती सर्वेक्षण में सहयोग।
- सांख्यिकीकरण में सहयोग।

3. पाण्डुलिपि शास्त्र और पुरातत्त्व-लेखन में प्रशिक्षण

- पाण्डुलिपि शास्त्र और पुरातत्त्व-लेखन में प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन।
- प्रशिक्षित मानव संसाधन का निर्माण।
- भारतीय विश्वविद्यालयों में पाण्डुलिपि शास्त्र पाठ्यक्रम को लागू करना।

- पाण्डुलिपियों का विवेचनात्मक संस्करण जारी करना।

4. सांख्यिकीकरण के माध्यम से प्रलेखन

- परवर्ती उपयोग हेतु मूल पाण्डुलिपियों का परिरक्षण।
- मूल प्रतियों में छेड़छाड़ किए बिना अध्येताओं और शोधकर्ताओं तक उनकी पहुँच और उनके उपयोग को प्रोत्साहित करना।
- देश के विभिन्न संकलनों में परिरक्षित पाण्डुलिपियों की सांख्यिकीकृत प्रतियों के संसाधन आधार के रूप में डिजिटल पुस्तकालय की स्थापना।
- पाण्डुलिपि के सांख्यिकीकरण हेतु मानकों और प्रक्रियाओं का निर्माण।

5. शोध और प्रकाशन

- तत्त्वबोध : व्याख्यानों के संकलन का प्रकाशन।
- समीक्षिका : संगोष्ठी आलेखों के संकलन का प्रकाशन।
- संरक्षिका : संरक्षण संगोष्ठी आलेखों के संकलन का प्रकाशन।
- कृतिबोध : विवेचनात्मक संरक्षणों का प्रकाशन।
- प्रकाशिका : दुर्लभ पाठों का प्रकाशन।
- कृति रक्षण : राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन की द्वि-मासिक पत्रिका।

6. जनसम्पर्क कार्यक्रम

- सार्वजनिक व्याख्यान।
- संगोष्ठी।
- प्रदर्शनी आदि।

प्रलेखन

सम्पूर्ण भारतवर्ष में विभिन्न पाण्डुलिपियाँ ज्ञात और अज्ञात भण्डारों में बिखरी हुई हैं। भारतवर्ष में तथा विदेशों में समुपलब्ध समस्त भारतीय पाण्डुलिपियों का सटीक प्रलेखन करके एक राष्ट्रीय आधार (डाटाबेस) में संग्रहीत करना राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन की प्रमुख प्रतिबद्धता है। निजी संग्रहों एवं लोक से प्राप्त विभिन्न सूचनाओं और संकलन प्रक्रियाओं के द्वारा भारतीय पाण्डुलिपियों का संकलन मिशन का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण योगदान है।

जब सन् 2003 में रा.पा.मि. की स्थापना की गई थी तो इसके समक्ष पाण्डुलिपियों की उपलब्धता का पता लगाना और पाण्डुलिपियों का राष्ट्रीय डाटाबेस तैयार करना, एक बहुत बड़ी चुनौती थी। यह एक चुनौतीपूर्ण कार्य इसलिए भी था कि पाश्चात्य देशों में पाण्डुलिपियाँ जिस तरह से व्यवस्थित पाण्डुलिपि भण्डारों में उपलब्ध हैं, उस रूप में भारत में पाण्डुलिपियाँ इन भण्डारों तक ही सीमित नहीं हैं। यहाँ पर पाण्डुलिपियाँ, पुस्तकालयों, मठों, मन्दिरों, मस्जिदों सहित लोगों के घरों में भी उपलब्ध हैं। इस प्रकार भारत में न केवल सबसे अधिक पाण्डुलिपियाँ उपलब्ध हैं बल्कि यहाँ पर सर्वाधिक संख्या में पाण्डुलिपि भण्डार भी उपलब्ध हैं। मिजोरम से गुजरात तक और लेह से कन्याकुमारी तक सर्वत्र पाण्डुलिपियाँ उपलब्ध हैं। इस सम्बन्ध में अनुमान लगाना निर्थक होगा।

अपनी स्थापना के पश्चात्, रा.पा.मि. ने पाण्डुलिपियों की खोज तथा प्रलेखन की चुनौती का

सामना करने के लिए विस्तृत योजना तैयार की। इसके अस्तित्व के प्रथम एवम् द्वितीय चरणों में पाण्डुलिपि भण्डारों का घर-घर पता लगाने तथा सर्वेक्षण पश्चात् विस्तृत प्रलेखन पर जोर दिया गया। साथ ही दीर्घकालीन लक्ष्य को प्राप्त करने की रणनीति के तहत देश के विभिन्न भागों में सम्बन्धित संस्थाओं का जाल तैयार किया गया। इन संस्थानों को पाण्डुलिपियों की खोज एवम् प्रलेखन का दायित्व प्रदान करने हेतु संस्थागत रूप-रेखा तैयार की गई। धीरे-धीरे इन संस्थाओं ने अधिक प्रभावी और सटीक ढंग से प्रलेखन का दायित्व लेना प्रारम्भ कर दिया। परिणामस्वरूप, पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्रों पर सर्वेक्षण और सर्वेक्षण पश्चात् कार्य करने पर जोर दिया जा रहा है। पहले की नीति में उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ है, जिसके संकेत रा.पा.मि. के स्थापना काल के बाद ही दिखने लगे थे। वर्ष 2015-16 में एम.आर.सी. तथा एम.सी.सी. के कार्य को और अधिक मजबूत करते हुए इन्हें और आर्थिक मदद तथा प्रभावी बनाने के प्रयास किए गए।

फलस्वरूप, अनेक निष्क्रिय पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्रों में फिर से जान फूँकी गई और बहुत-से नए पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र खोले गए जिसके फलस्वरूप आँचलिक असन्तुलन दूर हो सकेगा और आँकड़ा संकल प्रयास को नया बल मिलेगा।

भारत में अधिकांश पाण्डुलिपि सम्पदा विद्वानों-शोधार्थियों के लिए एक सन्दर्भ पोर्टल पर

प्रलेखन की दृष्टि से उपलब्ध कराने हेतु उपयुक्त नहीं है। कई दृष्टान्तों में हम देखते हैं कि अतीत और वर्तमान की संरकृति के ज्ञान में ये पाण्डुलिपियाँ एक शून्य की स्थिति पैदा करती हैं। वहाँ इन पाण्डुलिपियों के अभिगमन सम्बन्धी ज्ञान का अभाव है।

भारत में एक करोड़ पाण्डुलिपियों के विद्यमान होने का अनुमान है। इस दृष्टि से भारत में पाण्डुलिपि का कदाचित् सबसे बड़ा भण्डार है। हालांकि इस विपुल सम्पदा के अधिकांश अंश का प्रलेखन इस तरह से नहीं किया गया है कि उसका विद्वान् और शोधकर्ता सहज रूप से उपयोग कर सकें। अक्सर इन पाण्डुलिपियों की जानकारी नहीं है अथवा इन तक लोगों की पहुँच नहीं है। इससे अतीत की ज्ञानसंस्कृति और वर्तमान के बीच एक अन्तराल उत्पन्न हो गया है।

पाण्डुलिपियों के राष्ट्रीय सूचीकरण के लिए रा.पा.मि. भारत में विस्तृत पाण्डुलिपि प्रलेखन कार्य में संलग्न है। लगभग 31,23,000 पाण्डुलिपियों के सम्बन्ध में सूचना रा.पा.मि. की वेबसाइट www.namami.gov.in में पहले से उपलब्ध है। इस इलेक्ट्रॉनिक सूची में सम्पूर्ण देश की संस्थानिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक और निजी संकलनों की पाण्डुलिपियों के सम्बन्ध में सूचना उपलब्ध है।

उद्देश्य

- संस्थाओं और निजी संग्रहों में उपलब्ध अज्ञात पाण्डुलिपि भण्डार का पता लगाना।
- देश की अनुमानित एक करोड़ पाण्डुलिपियों का प्रलेखन।
- पाण्डुलिपियों के सम्बन्ध में सूचना संकलित

करने तथा सजगता लाने के लिए ज़मीनी स्तर पर सम्पर्क करना।

- पाण्डुलिपियों की इलेक्ट्रॉनिक सूची निर्मित कर उसे इंटरनेट पर उपलब्ध करवाना।

प्रविधि

- ज्ञात-अज्ञात, निजी-सार्वजनिक, सूचीबद्ध-गैर-सूचीबद्ध सभी प्रकार की पाण्डुलिपियों की पहचान करने के लिए प्रत्येक राज्य और संघ राज्य क्षेत्र में राष्ट्रीय सर्वेक्षण आयोजित करना।
- स्व-शासकीय निकाय एवं आम जन सहित राज्य और जिला प्रशासन के साथ वृहत्तर स्तर पर समन्वय करना।
- पाण्डुलिपि ऑकड़ा-पत्र में प्रत्येक पाण्डुलिपि के प्रलेखन हेतु सर्वेक्षण पश्चात् व्यापक कार्यक्रम संचालित करना।
- पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्रों (एम.आर.सी.) से ऑकड़े प्राप्त करना।
- ऑकड़ों की छँटनी, जाँच और उन्हें व्यवस्थित कर डाटाबेस में उनकी प्रविष्टि करना।
- निर्धारित प्रश्नावली और पाण्डुलिपि ऑकड़ा-प्रपत्र के माध्यम से भारत के बाहर भारतीय पाण्डुलिपियों के संकलन के प्रलेखन को प्रोत्साहन।

ऑकड़ा प्रसंस्करण

सूचना संगृहीत करने के बाद एम.आर.सी. अथवा एम.पी.सी. पर उसकी प्रविष्टि मैनुस ग्रन्थावली सॉफ्टवेयर में की जाती है और अन्ततः उस सूचना

को मिशन के पास भेजा जाता है जिसकी विभिन्न क्षेत्रों के विद्वान् जाँच करते हैं।

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि इलेक्ट्रॉनिक डाटाबेस

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि इलेक्ट्रॉनिक डाटाबेस भारतीय पाण्डुलिपियों का अपनी तरह का पहला ऑनलाइन सूचीकरण है। ऐसा विभिन्न संस्थाओं द्वारा अतीत में पाण्डुलिपि प्रलेखन के विभिन्न प्रयासों के कारण सम्भव हुआ। मिशन के आँकड़ा-पत्रों के माध्यम से प्रलेखित प्रत्येक पाण्डुलिपि से जुड़ी सूचना के विभिन्न पहलू सूची में अंकित होते हैं, यथा –

शीर्षक, टिप्पणी, भाषा, लिपि, विषय, उपलब्धता स्थान, पृष्ठों की संख्या, चित्र, लेखन, तिथि आदि। समेकित पोर्टल के रूप में इसे लेखक, विषय जैसी श्रेणियों से खोजा जा सकता है।

भारत के सम्पन्न बौद्धिक विरासत के प्रति लोगों को संवेदनशील बनाने के साथ-साथ डाटाबेस भावी पीढ़ी के लिए पाण्डुलिपियों को संरक्षित करने, परिरक्षित करने, सांख्यिकीकृत करने, उन तक पहुँच को बढ़ावा देने और सुरक्षित रखने की दिशा में नीति-निर्माण करने को प्रोत्साहित करेगा।

आँकड़ा संग्रह विवरण

वर्ष	प्राप्त आँकड़े	अनुरक्षित आँकड़े
2003-04	5,222	5,222
2004-05	44,172	49,394
2005-06	10,383	59,777
2006-07	6,18,760	6,78,537
2007-08	6,67,116	13,45,653
2008-09	5,46,498	18,92,151
2009-10	3,40,721	22,32,872
2010-11	1,74,866	24,07,738
2011-12	2,59,727	26,67,465
2012-13	1,76,457	28,43,922
2013-14	1,65,788	30,09,710
2014-15	1,77,845	31,87,555
2015-16	1,39,450	33,27,005
2016-17	1,44,977	34,71,982
2017-18	0,82,858	35,54,840

पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र का वर्ष 2017–18 में योगदान

क्र.सं. राज्य का नाम	एम.आर.सी. का नाम व पता	2017–18
1 उत्तर प्रदेश	अखिल भारतीय संस्कृत परिषद् महात्मा गाँधी मार्ग, हज़रतगंज, लखनऊ	5,080
2	मजहर मेमोरियल संग्रहालय, गाजीपुर	14,000
3 हरियाणा	संस्कृत, पाली एवम् प्राकृत विभाग कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र – 136 119	4,363
4 हिमाचल प्रदेश	हिमाचल कला, संस्कृति और भाषा अकादेमी विलफ एंड एस्टेट, शिमला – 171 001, हिमाचल प्रदेश	11,533
5 जम्मू–कश्मीर	केन्द्रिय बौद्ध अध्ययन संस्थान, लेह, श्रीनगर – 194 101, जम्मू–कश्मीर	3,411
6 उड़ीसा	श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी, ओडिशा	2,336
7 पश्चिम बंगाल	ऐशियाटिक सोसायटी, कोलकाता – 700 073	6,963
8 बिहार	श्री देव कुमार जैन प्राच्य शोध संस्थान देवाश्रम, महादेव रोड, आरा, बिहार – 802 301	8,320
9	नव नालंदा महाविहार संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, नालंदा, बिहार	4,439
10 असम	ताय अध्ययन एवं शोध संस्थान, मोरानहाट, जिला – सिबसागर	2,506
11 राजस्थान	श्री सत श्रुत प्रभान ट्रस्ट जयपुर, राजस्थान	616
12 मध्य प्रदेश	डॉ हरिसिंह गौड़ विश्वविद्यालय, गौड़नगर, सागर, म.प्र. – 470 003	4,500
13 महाराष्ट्र	भंडारकर ओरिएंटल रिसर्च संस्था, पुणे, महाराष्ट्र शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, महाराष्ट्र	1,677 4,491

14	तमिलनाडु	पुरातत्त्व विभाग, तमिल वालारची वलगम हिल्स रोड, एगमोर, चेन्नै – 600 008	7,001
15	केरल	थुंचन मेमोरियल ट्रस्ट थुंचन परंबा, तिरुर, जिला – मामल्लपुरम्, केरल	1,622
		2017–2018 में कुल योगदान	82,858
		2003–2016 तक में कुल योगदान	34,71,982
		एम.पी.सी. तथा अन्य संस्थानों द्वारा योगदान	7,61,707
		सभी द्वारा कुल योगदान	43,16,547



संरक्षण

पाण्डुलिपि संरक्षण

उपलब्ध पाण्डुलिपि के जीवनकाल को बढ़ाने अथवा क्षतिग्रस्त पाण्डुलिपि के जीर्णोद्धार की दिशा में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से की गई गतिविधि को संरक्षण कहते हैं। संरक्षण दो प्रकार के हो सकते हैं – निवारक और उपचारात्मक।

निवारक संरक्षण :— इसके अन्तर्गत पाण्डुलिपि के क्षतिग्रस्त होने के भावी जोखिम को कम किया जाता है। इसके तहत पाण्डुलिपि भण्डार क्षेत्र के तापमान और आद्रता को नियन्त्रित रखा जाता है और पाण्डुलिपि भण्डार का नियमित निरीक्षण किया जाता है।

उपचारात्मक संरक्षण :— पाण्डुलिपि के क्षय को रोकने हेतु अपनाई गई प्रत्यक्ष प्रक्रिया को उपचारात्मक संरक्षण कहते हैं।

रा.पा.मि. पाण्डुलिपियों की विशाल निधि में निहित ज्ञान की विरासत को सुरक्षित रखने तथा उसके प्रसार के लिए राष्ट्रीय स्तर पर किया गया विश्व में प्रथम समेकित प्रयास है। सन् 2003 में अपनी स्थापना काल से रा.पा.मि. ने अपने आदर्श वाक्य “भविष्य हेतु अतीत के संरक्षण” को पूरा करने के लिए एक लम्बी यात्रा तय की है।

रा.पा.मि. के संरक्षण प्रयास के तीन आयाम हैं –

1. मूल पाण्डुलिपियों का संरक्षण

2. सांख्यिकीकरण के माध्यम से संरक्षण

3. माइक्रोफिल्म के माध्यम से संरक्षण

सजगता और विशेषता को प्रोत्साहित करके सांस्कृतिक सम्पदा का संरक्षण करना सांस्कृतिक विरासत के क्षेत्र से सम्बन्धित सभी के ध्यान देने योग्य विषय है। पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्रों (एम.सी.सी.) के अपने नेटवर्क के माध्यम से रा.पा.मि. पाण्डुलिपि संरक्षण में विशेषता का राष्ट्रीय आधार तैयार करने के लिए देश भर में कार्यशालाओं और प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करता है। इन कार्यशालाओं में पाण्डुलिपि भण्डारों, पाण्डुलिपि के व्यक्तिगत संकलनों, एम.आर.सी., एम.सी.पी.सी., एम.सी.सी. और अन्य संस्थानों में पाण्डुलिपि के निवारक और उपचारक संरक्षण में संलग्न कार्मिकों को प्रशिक्षण दिया जाता है।

संरक्षण कार्यशालाओं में दो उद्देश्यों को ध्यान में रखा जाता है – पाण्डुलिपि का संरक्षण और इस क्षेत्र में प्रशिक्षित मानव संसाधन का विकास करना। संरक्षण की तुरन्त आवश्यकता को महसूस करते हुए रा.पा.मि. ने पाण्डुलिपि संरक्षण को व्यापक स्तर पर प्रारम्भ किया है। इन उपायों के साथ ही रा.पा.मि. ने अपने नई दिल्ली स्थित मुख्यालय में एक प्रयोगशाला प्रारम्भ की है। यहाँ पर छः सुप्रशिक्षित संरक्षक निवारक एवम् उपचारात्मक उपायों द्वारा महत्वपूर्ण पाण्डुलिपियों के संरक्षण को मूर्त रूप दे रहे हैं।

वर्ष 2017-18 के दौरान आयोजित कार्यशाला

सहयोगी संस्थान का नाम

चिन्मय, केरल

राज्य संग्रह एण्ड शोध संस्थान, तारनाका, हैदराबाद

द्रविड़ीयन विश्वविद्यालय, श्रीनिवासवनम, कुप्पम देवस्थान,
महादेव रोड, आरा, बिहार – 802 301

एम. के. एस. सामाजिक विज्ञान पुस्तकालय संस्था
एल. एन. मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा, बिहार

इनटैक, लखनऊ.

ताय शिक्षण एण्ड शोध मोरानहाट, असम

बंगीय साहित्य परिषद, कोलकाता

मणिपुर विश्वविद्यालय, इम्फाल, मणिपुर

तिथि

21 से 25 अगस्त 2017

9 से 13 अक्टूबर 2017

23 से 27 अक्टूबर 2017

14 से 18 नवम्बर 2017

20 से 24 नवम्बर 2017

6 से 10 नवम्बर 2017

दिसम्बर 2017

5 से 9 नवम्बर 2017

उपचारात्मक संरक्षण कार्यशाला

हिमालय विरासत समाज एवं कला संरक्षण केन्द्र

नैनीताल इनटैक, भुवनेश्वर

10 जुलाई से 10 अगस्त 2018

10 अगस्त से 9 सितम्बर 2018

पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र का वर्ष 2017-18 में योगदान

राज्य का नाम क्र.स. पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र का नाम

निवारक संरक्षण के अन्तर्गत संरक्षित पन्ने

उपचारक संरक्षण के अन्तर्गत संरक्षित पन्ने

आंध्र प्रदेश		निर्देशक ओरिएंटल शोध संस्थान, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय तिरुपति – 517 502	98	12,361
	2	आंध्रप्रदेश राज्य अभिलेखागार एवं शोध संस्थान, तारनाका, हैदराबाद – 7	88,323	2,597

बिहार	3	श्री देव कुमार जैन प्राच्य शोध संस्थान देवाश्रम, महादेव रोड, आरा, बिहार	39,570	3,393
	4	पटना संग्रहालय विद्यापति मार्ग, पटना, बिहार	1,14,268	1,372
हिमाचल प्रदेश	5	भाषा एवं संस्कृति विभाग हिमाचल राज्य संग्रहालय, चौड़ा मैदान शिमला, हिमाचल प्रदेश – 171 004	25,035	4,211
हरियाणा	6	संस्कृत, पाली एवं प्राकृत विभाग कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, हरियाणा	1,33,499	367
जम्मू—कश्मीर	7	केन्द्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान चोगलामसार, लेह (लद्दाख), जम्मू—कश्मीर		1,812
कर्नाटक	8	राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन एवं शोध संस्थान श्रीदेवल तीर्थम्, श्रवणबेलगोला जिला — हासन, कर्नाटक	1,59,420	
	9	श्रीवादिराज शोध फाउन्डेशन श्रीपुथिगे मठ, कार स्ट्रीट, उडूपी, कर्नाटक	28,024	9,044
केरल	10	प्राच्य शोध संस्थान एवं पाण्डुलिपि पुस्तकालय, केरल विश्वविद्यालय तिरुवनंतपुरम, केरल – 695 585	1,85,208	43,630
मध्य प्रदेश	11	कुन्द-कुन्द ज्ञानपीठ देवी अहिल्या विश्वविद्यालय 584, एम.जी. रोड, तुकोगंज, इंदौर	37,616	
महाराष्ट्र	12	भंडारकर प्राच्य शोध संस्थान दक्खन जिमखाना, पुणे, महाराष्ट्र	48,490	1,195
नार्थ ईस्ट	13	डा. अबुल कलाम कोर्डिनेटर मणिपुर राज्य संग्रहालय, कैशम्पत, इम्फाल, मणिपुर – 795001	3,607	280
	14	त्रिपुरा विश्वविद्यालय सूर्यमणिनगर, त्रिपुरा वेस्ट, त्रिपुरा	15,065	6,211

ओडिशा	15	इनटैक आई.सी.आई. उड़ीसा कला संरक्षण केन्द्र उड़ीसा राज्य संग्रहालय परिसर भुवनेश्वर, उड़ीशा – 751 014	9,202	1,246
	16	ए.आई.टी.आई.एच.वाई.ए. प्लाट नं. 4 / 330, प्रथम तल पोस्ट – शिशुपाल गडा, भुवनेश्वर – 2	15,649	7,626
राजस्थान	17	दिगम्बर जैन पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र जैन विद्या संस्थान दिगम्बर जैन नसीम भट्टारकजी स्वामी रामसिंह मार्ग, जयपुर – 302 004	47,834	
	18	अकलंक शोध संस्थान अकलंक विद्यालय संगठन बसंत विहार, कोटा, राजस्थान	5,603	6,172
उत्तर प्रदेश	19	वृन्दावन शोध संस्थान रमणरेती, वृन्दावन, उ.प्र. – 281 121	19,099	3,682
	20	नागार्जुन बौद्ध फाउन्डेशन 18 अंधियारी बाग, गोरखपुर उत्तर प्रदेश – 273 001	37,207	
	21	इनटैक, भारतीय संरक्षण संस्थान परिषद् एच.आई.जी.–44, सेक्टर–ई अलीगंज स्कीम, लखनऊ – 226 024		5,112
	22	केन्द्रीय पुस्तकालय बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय बनारस, उत्तर प्रदेश	18,663	3,010
	23	मजहर स्मृति संग्रहालय बहारियाबाद, गाज़ीपुर उत्तर प्रदेश – 275 204	48,529	
उत्तराखण्ड	24	हिमालय विरासत समाज एवं कला संरक्षण केन्द्र मार्कण्डेय हाउस, रानीबाग, नैनीताल – 263 126, उत्तराखण्ड	50,298	4,936

सांख्यिकीकरण

पाण्डुलिपि के सांख्यिकीकरण का तात्पर्य है शब्द-सम्पदा-रूपी विरासत का परिरक्षण और प्रलेखन करना। वर्तमान समय में सांख्यिकीकरण एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में उभरकर सामने आया है। सूचना प्रौद्योगिकी में प्रगति के कारण जहाँ एक ओर मूल पाठ के परिरक्षण और प्रलेखन की आशा बँधती है वहीं दूसरी ओर इसी के साथ विद्वानों और शोधार्थियों के लिए उसकी उपलब्धता पहले की तुलना में अधिक सुलभ हो गई है। सन् 2004 में मिशन ने सांख्यिकीकरण की एक पायलट परियोजना की शुरुआत की जिसका उद्देश्य सम्पूर्ण देश के विभिन्न पाण्डुलिपि भण्डारों का सांख्यिकीकरण था। सन् 2006 में पायलट परियोजना पूरी हो गई। इसके उपरान्त नई परियोजनाओं की शुरुआत हुई। जिनका लक्ष्य देश के महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपि संकलनों का सांख्यिकीकरण था। नई सांख्यिकीकरण परियोजनाओं के लिए मिशन पाण्डुलिपियों के हेतु एक सांख्यिकीकरण संसाधन आधार तैयार करना चाहता है।

डिजिटलीकरण के तृतीय चरण को सफलतापूर्वक पूरा किया जा चुका है तथा चतुर्थ चरण में एक तिहाई अनुमानित कार्यों को पूरा किया जा चुका है।

उद्देश्य

- भावी पीढ़ियों के लिए मूल पाण्डुलिपियों का परिरक्षण।
- मूल प्रतियों में छेड़छाड़ किए बिना उन तक

विद्वानों और शोधार्थियों की पहुँच और उपयोगिता को प्रोत्साहित करना।

- देश के कुछ महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपि संकलनों की सांख्यिकीकृत प्रतियों के संसाधन आधार के रूप में सांख्यिकीकृत पुस्तकालय का निर्माण करना।
- पाण्डुलिपियों के सांख्यिकीकरण हेतु मानकों और प्रक्रियाओं का निर्माण करना।

प्रविधि

- सांख्यिकीकरण के प्रथम चरण में पायलट परियोजना के अन्तर्गत पाँच राज्यों में प्राप्त पाण्डुलिपियों की पाँच पेटियों पर काम हुआ है।
- द्वितीय चरण के अन्तर्गत देश भर में फैले पाण्डुलिपि भण्डारों की महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपियों के अस्सी लाख पृष्ठों का सांख्यिकीकरण किया गया।
- तृतीय चरण के अन्तर्गत देश भर में फैले पाण्डुलिपि भण्डारों की महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपियों के अन्य अस्सी लाख पृष्ठों का सांख्यिकीकरण किया गया।
- चतुर्थ चरण के अन्तर्गत देश भर में फैले पाण्डुलिपि भण्डारों की महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपियों के अन्य पचहत्तर लाख पृष्ठों का सांख्यिकीकरण का लक्ष्य रखा गया है।
- सूचियों का सांख्यिकीकरण और नव

कैटलोग्स कैटलोगरम का सांख्यिकीकरण।

- अभिलेखीय उद्देश्य से सांख्यिकीकृत छवियों से माइक्रोफिल्म तैयार करना।
- भण्डारण एवं सुविधापूर्वक पहुँच हेतु सांख्यिकीकृत पाण्डुलिपि पुस्तकालयों की स्थापना।

स्कैन की गई छवि हेतु छवि प्रारूप

पाण्डुलिपि के प्रत्येक पृष्ठ के लिए तीन प्रकार की छवियों को उत्पन्न करने की आवश्यकता होती है।

मास्टर इमेज (मूल अस्वच्छ और असंपीडित)।

क्लीन इमेज (कम क्षयी स्वच्छ छवि)।

पी.डी.एफ.—ए (व्युत्पन्न क्षयी छवि)।

इन छवियों का विस्तृत विनिर्देशन

रॉ मास्टर इमेज (मूल सांख्यिकीकृत छवि)

फाइल प्रारूप : टिफ 6.0 अथवा उच्चतर

संपीडन : असंपीडित

स्थानिक रिसॉल्यूशन : 300 / 600 डी.पी.आई.

न्यूनतम 24 ऑप्टिकल बीट्स

संसिकोटा मास्टर : 3000—5000 पिक्सल

विषय अर्द्ध आँकड़े : रा.पा.मि. द्वारा निर्धारित मानक के अनुरूप

फाइल नामकरण : रा.पा.मि. द्वारा यथा विनिर्दिष्ट

क्लीन मास्टर इमेज (स्वच्छ छवि)

फाइल प्रारूप : टिफ 6.0 अथवा उच्चतर

संपीडन : कम क्षय संपीडित

स्थानिक निवेदन : 8" x 10" 300 डी.पी.आई. 24

बीट

स्वच्छ मास्टर: 3000—5000 पिक्सल

विषय अर्द्ध आँकड़े : रा.पा.मि. द्वारा निर्धारित मानक के अनुरूप

फाइल नामकरण : रा.पा.मि. द्वारा यथा विनिर्दिष्ट

पी.डी.एफ.—ए इमेज

फाइल प्रारूप : पी.डी.एफ.

संपीडन : ग्रुप 4 सी.सी.आई.टी.टी. क्षयी संपीडन

स्थानिक रिसॉल्यूशन: 300 / 600 डी.पी.आई. पर 1024 गुने 768 पिक्सल

विषय अर्द्ध आँकड़े : रा.पा.मि. द्वारा निर्धारित मानक के अनुरूप

फाइल नामकरण : रा.पा.मि. द्वारा यथा विनिर्दिष्ट

अन्य गतिविधियाँ

1. सांख्यिकीकरण पाण्डुलिपि पुस्तकालय

रा.पा.मि. के प्रमुख उद्देश्य भारतीय सांख्यिकीकरण पाण्डुलिपि लाइब्रेरी की सीपाना करना है जो कि सृजनता एवं मानवीय ज्ञान के रूप में उपलब्ध देश की पाण्डुलिपियों तक संहज रूप में पहुँच को बढ़ावा देगी। इस मिशन को साकार करने के लिए प्रथम चरण के अन्तर्गत सांख्यिकीकृत पुस्तकालय की स्थापना करना है जिसमें एक स्थान पर मुख्य रूप से भारतीय भाषाओं की महत्वपूर्ण पाण्डुलिपियों की सांख्यिकीकृत प्रतियाँ उपलब्ध हो सके। इस सांख्यिकीकृत पुस्तकालय में सभी प्रकार के ज्ञान एवं सांख्यिकीकृत सामग्री एक साथ उपलब्ध रहेगी। इस पुस्तकालय के बनने से हम बहुत जल्द यह अपेक्षा करेंगे कि विज्ञान, कला, संस्कृति, परम्परागत चिकित्सा पद्धति, वेद, तन्त्र और अन्य विषयों में भारतीय सांख्यिकीकृत पुस्तकालय स्थापित होने के प्रयास प्रारम्भ हो जाएंगे।

31 मार्च 2016 तक रा.पा.मि. ने 2,61,57,821 पृष्ठों में व्याप्त डिजिटल तस्वीरें, डी.वी.डी. एवं हार्ड डिस्क का संग्रह किया है। इसके अतिरिक्त डिजिटाइजेशन कार्य प्रगति पर होने के कारण भविष्य में भी प्रचुर सामग्री प्राप्त होगी। यदि उपलब्ध डाटा को डी.वी.डी./हार्ड डिस्क में रखा जाए तो सम्बद्ध डाटा के करण्ट होने की सम्भावना है। डी.वी.डी./हार्ड डिस्क की आयु 5 वर्ष से अधिक नहीं होती। डाटा की सुरक्षा और इसकी सुगम उपलब्धता की दृष्टि से डाटा के संरक्षण की आशा से एक सर्वर की आवश्यकता है। यदि पाण्डुलिपियों की सामग्री की डिजिटाइज्ड प्रति को सर्वर में उपयुक्त तरीके से न रखा जाए तो डाटा के नुकसान होने की सम्भावना है। डिजिटल पाण्डुलिपि पुस्तकालय में सभी प्रकार की डिजिटल तस्वीरों के भण्डारण के लिए एक 100 टी.बी. के डाटा सर्वर का अधिग्रहण किया जाना है जो विद्वानों के शोध-सम्बन्धी उद्देश्यों के लिए पाण्डुलिपि डाटाबेस के साथ जोड़ा जाएगा।

रा.पा.मि. इस ज्ञान आधर को सुलभ करने के लिए नई दिल्ली में प्रारम्भ 10 लोगों द्वारा उपयोग किए जाने की सुविधा वाले सांख्यिकीकृत पुस्तकालय की स्थापना की योजना बना रहा है जिसे बाद में एक सौ लोगों के उपयोग करने की क्षमता वाले पुस्तकालय के रूप में अद्यतन किए जाने की सम्भावना है। प्रयोक्ता पी.सी. के माध्यम से आँकड़ा केन्द्र से आँकड़ा प्राप्त कर सकेगा। भण्डारण सर्वर में प्रत्येक दिन नए आँकड़े जोड़े जाने की सम्भावना है। यह भी आवश्यकता है कि आँकड़ा-भण्डारण, अतिरेक से बचने, संयोग समय तथा उपलब्धता के

मामले में अन्तर्राष्ट्रीय मानक के अनुरूप हो।

ऐसा भी अपेक्षित है कि इस पुस्तकालय की स्थापना के साथ ही तुरन्त इसमें पूरी क्षमता न उपलब्ध हो, शुरू में इसमें सीमित संख्या में प्रयोक्ता इसका इस्तेमाल कर पाएं और इसकी भण्डारण क्षमता भी सीमित हो। हालांकि ऐसा प्रावधन हो कि भविष्य में 600 टी.बी. का भण्डारण हो सके और 100 प्रयोक्ता इसका एक साथ उपयोग कर सकें।

2. सांख्यिकीकरण से माइक्रोफिल्म निर्माण

मिशन ने महत्वपूर्ण पाण्डुलिपियों की 2.61 करोड़ सांख्यिकीकृत छवियों का संग्रह किया है और यह कार्य जारी है। वर्तमान में इन छवियों को डी.वी.डी. में रखा गया है लेकिन दीर्घकाल तक इनके भण्डारण के लिए इनका माइक्रोफिल्म बनाना आवश्यक है। दीर्घकाल तक आँकड़ों की सुरक्षा के लिए यह लाभकारी होगा (ये आँकड़े 500 वर्षों तक सुरक्षित रह सकते हैं)। भौतिक क्षति से आँकड़ों को बचाना उपयोगी होता है। माइक्रोफिल्म का निर्माण सांख्यिकीकृत आँकड़ों के अभिलेखागारीय महत्व और भावी पीढ़ियों द्वारा उपयोग की दृष्टि से लाभदार्द होगा।

रा.पा.मि. का लक्ष्य है कि सांख्यिकीकृत आँकड़ों का एक ऐसा अभिलेखागार तैयार किया जाए जिससे प्रयोक्ताओं को सदियों तक पाण्डुलिपियों से अपेक्षित सूचनाएं प्राप्त हो सकें। वर्तमान में माइक्रोफिल्म ही सर्वाधिक अवधि तक आँकड़ों के अभिलेखागारीय भण्डारण के लिए सबसे उपयुक्त साधन है।

सांख्यिकीकरण : प्रथम चरण (2005–2007)

क्र. संस्थान का नाम सं.	पाण्डुलिपियों की संख्या	पृष्ठ संख्या	राज्य
1 उड़ीसा राज्य संग्रहालय	1,749	3,49,588	उड़ीसा
2 जैन पाण्डुलिपियाँ, लखनऊ (ओ.पी. अग्रवाल संकलन)	180	42,951	उ.प्र.
3 कुट्टिअट्टम पाण्डुलिपियाँ, केरल	340	38,260	केरल
4 ओरिएण्टल अनुसन्धान पुस्तकालय, जम्मू-कश्मीर	10,147	18,24,162	जम्मू-कश्मीर
5 अल्लमा इकबाल पुस्तकालय, जम्मू-कश्मीर	365	97,648	जम्मू-कश्मीर
6 श्री प्रताप सिंह पुस्तकालय, जम्मू-कश्मीर	74	28,536	जम्मू-कश्मीर
7 श्री शंकरदेव कलाक्षेत्र, आसाम	2,286	1,58,695	आसाम
8 सिद्ध पाण्डुलिपियाँ, चेन्नई	2,069	78,506	तमिलनाडु
कुल योग	17,210	26,18,346	

सांख्यिकीकरण : द्वितीय चरण (2007–2012)

क्र. संस्थान का नाम सं.	पाण्डुलिपियों की संख्या	पृष्ठ संख्या	राज्य
1 कृष्णकान्त, पुस्तकालय, गुवाहाटी	2,091	1,56,173	आसाम
2 उड़ीसा राज्य संग्रहालय, भुवनेश्वर	6,093	14,20,666	उड़ीसा
3 डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर	1,010	1,17,603	म.प्र.
4 आनन्दाश्रम संस्था, पुणे	7,939	9,21,667	महाराष्ट्र
5 भारत इतिहास संशोधन मण्डल, पुणे	4,429	6,60,730	महाराष्ट्र
6 फ्रेंच संस्थान, पोण्डिचेरी	506	1,70,629	तमिलनाडु
7 एशियान अध्ययन संस्था, चेन्नई	481	34,505	तमिलनाडु
8 कुन्द-कुन्द ज्ञानपीठ, इन्दौर	7,506	11,56,373	म.प्र.
9 भोगीलाल लेहरचन्द भारतीय विद्या संस्थान, दिल्ली	22,907	10,64,900	दिल्ली
10 अखिल भारतीय संस्कृत परिषद, लखनऊ	12,887	4,58,376	उ.प्र.
11 राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, इलाहाबाद	1,545	1,65,220	उ.प्र.
12 हिमाचल अकादमी, शिमला	225	55,751	हिमाचल प्रदेश
13 वृन्दावन शोध संस्थान, वृन्दावन	22,375	15,61,864	उ.प्र.
कुल योग	89,994	79,44,457	

सांख्यिकीकरण : तृतीय चरण (2012–2014)

क्र. संस्थान का नाम सं.	पाण्डुलिपियों की संख्या	पृष्ठ संख्या	राज्य
1 भारत इतिहास संशोधन मण्डल, पुणे	22,873	14,50,375	महाराष्ट्र
2 आनन्दाश्रम संरथा, पुणे	6,734	3,27,484	महाराष्ट्र
3 भण्डारकर प्राच्य शोध संस्थान, पुणे	35	22,679	महाराष्ट्र
4 राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, इलाहाबाद	35,020	25,76,879	उ.प्र.
5 जामिया हमदर्द, नई दिल्ली	4,200	10,10,273	दिल्ली
6 वि.वि.बी.आई.एस., होशियारपुर	1,500	1,14,376	पंजाब
7 उड़ीसा राज्य संग्रहालय, भुवनेश्वर	3,175	6,03,142	उड़ीसा
8 रा.पा.मि. संकलन, नई दिल्ली	562	1,21,329	दिल्ली
9 राजस्थान प्राच्य अनुसन्धान संस्थान	28,813	17,92,864	राजस्थान
कुल योग	1,02,912	80,19,401	

सांख्यिकीकरण : चतुर्थ चरण (2014–2018)

क्र. संस्थान का नाम सं.	पाण्डुलिपियों की संख्या	पृष्ठ संख्या	राज्य
1 राजस्थान प्राच्य अनुसन्धान संस्थान, भरतपुर	9,151	5,42,235	राजस्थान
2 राजस्थान प्राच्य अनुसन्धान संस्थान, बिकानेर	6,158	3,09,502	राजस्थान
3 राजस्थान प्राच्य अनुसन्धान संस्थान, कोटा	9,716	10,36,252	राजस्थान
4 राजस्थान प्राच्य अनुसन्धान संस्थान, अलवर	1,957	3,01,639	राजस्थान
5 कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र	11,442	7,33,501	हरियाणा
6 पटना संग्रहालय, बिहार	856	1,71,158	बिहार
7 राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, इलाहाबाद	16,382	13,32,629	उ.प्र.
8 भण्डारकर प्राच्य शोध संस्थान, पुणे	7,553	10,25,646	महाराष्ट्र
9 वडोदरा प्राच्य शोध संस्थान, वडोदरा	23,254	21,23,055	गुजरात
कुल योग	86,469	75,75,617	

जन-सम्पर्क कार्यक्रम

रा.पा.मि. केवल भारतीय पाण्डुलिपियों का पता लगाना, सूचीकरण और संरक्षण मात्र ही नहीं चाहता अपितु अभिगमन वृद्धि, जागरूकता वृद्धि और शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए इनमें प्राप्त ज्ञान के उपयोग को प्रोत्साहित करना भी इसका उद्देश्य है। मिशन चाहता है कि पाण्डुलिपियों में निहित ज्ञान के अनेक पहलुओं को व्याख्यानों, सेमिनार, एवं विद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों के छात्रों के लिए विशेष रूप से तैयार किए गए कार्यक्रमों के आधार से जन-साधारण तक पहुँचाया जाए।

मिशन के पास तत्त्वबोध शीर्षक के व्याख्यानों की एक शृंखला है। इसके अन्तर्गत विभिन्न बौद्धिक अनुशासनों के प्रतिनिधि विद्वानों को उनके विचारों को लोगों के बीच अभिव्यक्त करने के लिए मिशन आमन्त्रित करता है। इस शृंखला का प्राथमिक उद्देश्य भारतीय ज्ञान विद्वानों को एक मंच पर लाना है जहाँ ये विद्वान् अपने विचारों को लोगों के बीच व्यक्त कर सकें और उन सदस्यों को जिनकी रुचि

इन विषयों में हो, के साथ संवाद कर सकें। जहाँ तक सम्भव हो पाया है हमने दिल्ली एवं देश के अन्य भागों में भी इसे एक मासिक व्याख्यान शृंखला के रूप में संस्थापित किया है। इसके दौरान मिशन को इण्डोलोजी तथा विशेष रूप से पाण्डुलिपि क्षेत्र में अध्ययनरत विद्वानों को सम्मान प्रदान करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। वक्ताओं द्वारा प्रस्तुत शोध-पत्रों का प्रकाशन भी मिशन द्वारा उनकी सहमति से किया जा रहा है।

सम्पर्क कार्यक्रम के निम्नलिखित उद्देश्य हैं –

- पाण्डुलिपि के सम्बन्ध में परिचर्चा, वाद-विवाद और आलोचना के लिए मंच उपलब्ध करवाना।
- भारत की पाण्डुलिपि विरासत के प्रति लोगों में जागरूकता और समझ बढ़ाना।
- आम आदमी में पाण्डुलिपि के प्रति रुचि, जागरूकता और ज्ञान उत्पन्न करना।

प्रदर्शनी 2017–18

क्र.स.	संस्थान का नाम	विषय	तिथि
1	विशाखा पुस्तक मेला, विशाखापटनम, आन्ध्रप्रदेश	बुक फेयर	1 से 10 दिसम्बर 2017
2	राष्ट्रीय मिशन, एन. बी. टी. के साथ सहयोग से नई दिल्ली	पर्यावरण	6 से 14 जनवरी 2018
3	पाण्डुलिपि प्रदर्शनी, पुरी, ओडिशा	पुरा लिपि प्रदर्शनी	25 से 27 मई 2018

पाण्डुलिपि शास्त्र

भारत की पाण्डुलिपि विरासत अपनी भाषायी और ग्रन्थीय विविधता की दृष्टि से अनुपम है। हालांकि समकालीन अनुसन्धान में पाठों में कौशल और विशेषज्ञता में कमी ने पाण्डुलिपि विरासत के अध्ययन और समझ के लिए एक गम्भीर संकट उत्पन्न कर दिया है। इस समस्या के निदान के लिए रा.पा.मि. ने भारतीय पाठ और पाण्डुलिपि के अध्ययन में छात्रों और अनुसन्धानकर्मियों को

प्रशिक्षित करने हेतु एक विस्तृत कार्यक्रम तैयार किया है। कार्यशालाओं, विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में पाण्डुलिपि शास्त्र की शुरुआत करने तथा उच्च अध्ययन में पाण्डुलिपि शास्त्र के लिए छात्रवृत्ति देने के माध्यम से रा.पा.मि. प्रत्यक्ष तौर पर पाण्डुलिपि अध्ययन में प्रशिक्षित लोगों का दल बनाने में सहयोग दे रहा है।

वर्ष 2017–18 में पाण्डुलिपि शास्त्र पर आयोजित मूलाधार कार्यशाला

क्र.सं संस्थान का नाम	लिपियाँ	प्रशिक्षित लोगों की संख्या	तिथि
1 राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश	ब्राह्मी, शारदा और टंकरी	30	25 अगस्त से 14 सितम्बर 2017
2 कच्छ विश्वविद्यालय, कच्छ, गुजरात	ब्राह्मी, शारदा, ग्रन्थ और पुरानी देवनागरी	26	15 अगस्त से 7 सितम्बर 2017
3 जैन विश्व भारती संस्था, लाडनूँ राजस्थान	ब्राह्मी, शारदा, ग्रन्थ और पुरानी देवनागरी	62	25 नवम्बर से 15 दिसम्बर 2017
4 गौहाटी विश्वविद्यालय, गुवाहाटी, असम	ब्राह्मी, गदगायन, और कैथिली	35	अभी आयोजित किया जाना है
5 बी. एन. मण्डल विश्वविद्यालय, मधेपुरा, बिहार	ब्राह्मी, कैथी, और मैथिली	30	अभी आयोजित किया जाना है
6 द्रविड़ियन विश्वविद्यालय, कुपम, आन्ध्र प्रदेश	ब्राह्मी और ग्रन्थ	33	अभी आयोजित किया जाना है

वर्ष 2017–18 में पाण्डुलिपि शास्त्र पर आयोजित उन्नत कार्यशाला

क्र. संस्थान का नाम सं.	लिपियाँ	प्रशिक्षित लोगों की संख्या	तिथि
1 सरस्वती – एम आर सी भद्रक, ओडिशा	ब्राह्मी, उड़िया, और करनी	30	25 फरवरी से 27 मार्च 2018
2 टी. आर. आई. बी. आई. एल. एस., नाशिक, महाराष्ट्र	ब्राह्मी, मोदी, शारदा और ग्रन्थ	30	अभी आयोजन किया जाना है
3 राजकीय कमलानगर कॉलेज, कमलानगर, मिजोरम	ब्राह्मी और चकमा	25	अभी आयोजन किया जाना है
4 चिन्मय अन्तर्राष्ट्रीय शोध संस्थान, एर्नाकुलम, केरल	ब्राह्मी, शारदा, और ग्रन्थ	30	अभी आयोजन किया जाना है

संगोष्ठी 2017–2018

क्र. संस्थान का नाम सं.	संगोष्ठी का शीर्षक	प्रतिभागियों की संख्या	तिथि
1 कलकत्ता गर्ल्स कॉलेज, पश्चिम बंगाल	अंडरस्टेंडिंग सूफिज्म : रिफ्लेक्शन्स फ्रॉम मैनुसक्रिप्ट्स एण्ड पॉपुलर कल्चर	30	21 से 23 नवम्बर 2017
2 राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति, आन्ध्र प्रदेश	अनपब्लिश्ड साइंटिफिक मैनुसक्रिप्ट्स इन संस्कृत	30	27 से 29 नवम्बर 2017
3 पी. जी. संस्कृत विभाग, उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर, ओडिशा	कन्ट्रीब्यूशन ऑफ ओडिशा टू संस्कृत मैनुसक्रिप्ट्स 1801–1950	30	25 से 27 दिसम्बर 2017
4 मिजो विभाग, मिजोरम विश्वविद्यालय, एजावल, मिजोरम	राइटिंग इन मिजो एण्ड मैनुसक्रिप्ट्स	15	1 से 3 नवम्बर 2017
5 नव नालन्दा महाविहार, (संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार), नालन्दा, बिहार	मैनुसक्रिप्ट्स ऑफ बिहार एनरिच द एशियन बुद्धिस्म	32	23 से 25 सितम्बर 2017
6 पंजाबी विभाग, ट्रिनिटि कॉलेज, जालंधर, पंजाब	ए स्टडी ऑफ मैनुसक्रिप्ट्स : पंजाबी लिटरेचर एण्ड हिस्ट्री	33	7 से 9 नवम्बर 2017
7 राजकीय संस्कृत कॉलेज, समदोंग, सिक्किम	अनपब्लिश्ड मैनुसक्रिप्ट्स इन नॉर्थ-इस्ट रीजन	25	10 से 12 मई 2018

तत्त्वबोध 2017–2018

क्र. संस्थान का नाम सं.	संगोष्ठी का शीर्षक	वक्ता	तिथि
1 नागार्जुन बुद्धिष्ट फाउण्डेशन, गोरखपुर	द बुद्धिष्ट संस्कृत लैंग्वेज एण्ड इट्स यूसेज इन द महायान केनोनिकल लिटरेचर	प्रो. एस. कौ. पाठक	12 फरवरी 2018
2 स्नातकोत्तर विभाग, ओडिया, बेरहमपुर विश्वविद्यालय, ओडिशा	पाम लीफ मैनुसक्रिप्ट्स ऑफ ओडिशा: इट्स कलेक्शन, प्रिसर्वेशन एण्ड पब्लिकेशन	प्रो. सुरेन्द्र नाथ दास	18 अगस्त 2017
3 राजकीय संस्कृत कॉलेज़, गंगटोक, सिक्किम	शब्दबोध प्रक्रिया	प्रो. बिश्नुपद महापात्र	13 मार्च 2018
4 दधिब्रमन संस्कृत महाविद्यालय कुराल, ओडिशा	उत्कलानां पाण्डुलिपि परम्परा इति विजयोपरि आलोचना	प्रो. एस. एन. दीक्षित	7 नवम्बर 2017
5 पुराना दरबार, देहरादून, उत्तराखण्ड	उत्तराखण्ड की पाण्डुलिपि धरोहर और उनकी विशेषताएँ	प्रो. देवेन्द्र कुमार सिंह	30 मार्च 2018
6 राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति, आन्ध्र प्रदेश	अनपब्लिश्ड मैनुसक्रिप्ट्स इन एस. सी. एस. वी. एम. वी. मैनुसक्रिप्ट लाइब्रेरी	प्रो. शंकरनारायण	अभी आयोजन किया जाना है
7 बी. टी. कॉलेज़, मदनपल्ली, आन्ध्र प्रदेश	कण्ट्रीब्यूशन ऑफ महाकवि वेमन फॉर तेलुगु शथक लिटरेचर	प्रो. रचपलम चन्द्रशेखर रेड्डी	अभी आयोजन किया जाना है
8 के. के. एच. राजकीय संस्कृत कॉलेज़, गौहाटी, असम	वैष्णव मैनुसक्रिप्ट्स	डॉ. सदानन्द	अभी आयोजन किया जाना है
9 विश्वविद्यालय केन्द्रीय लाइब्रेरी भागलपुर, बिहार	मैनुसक्रिप्ट्स : रिजर्वॉइर ऑफ ट्रेडिशनल नॉलेज ऑफ एण्शाएण्ट इण्डिया	डॉ. डी. के. सिंह	अभी आयोजन किया जाना है

प्रकाशन

अप्रकाशित पाण्डुलिपियों, पाण्डुलिपियों के विवेचनात्मक संस्करणों, संगोष्ठी आलेखों और व्याख्यानों आदि के प्रकाशन पर रा.पा.मि. के कार्यक्रमों में विशेष जोर दिया जाता है। रा.पा.मि. ने प्रारम्भिक रूप में अन्य प्रकाशनों के साथ चार प्रकाशनों की शृंखला प्रारम्भ की है – तत्त्वबोध (व्याख्यान आलेख), कृतिबोध (विवेचनात्मक संस्करण), समीक्षिका (संगोष्ठी आलेख) और संरक्षण (संरक्षण सम्बन्धी संगोष्ठी आलेख)। इसके साथ ही अन्य प्रकाशन भी उपलब्ध हैं।

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन के प्रकाशन

तत्त्वबोध : मासिक व्याख्यान की शुरुआत राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन ने जनवरी 2005 में की थी। अब यह बौद्धिक बहस और परिचर्चा के एक मंच के रूप में उभरकर आया है। भारत में ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में साधनारात विभिन्न द्वारानों ने दिल्ली तथा देश भर के अन्य केन्द्रों में सभा को सम्बोधित किया है तथा श्रोताओं के साथ परिचर्चा की है। मिशन ने इन व्याख्यानों का प्रकाशन तत्त्वबोध नाम से किया है।

संरक्षिका व समीक्षिका : राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन अपने सम्पर्क कार्यक्रम के अन्तर्गत राष्ट्रीय स्तर पर संगोष्ठियों का आयोजन करता है। इन संगोष्ठियों में प्रस्तुत आलेखों को संरक्षिका (संरक्षण से जुड़े) और समीक्षिका (अनुसन्धान उन्मुखी) शीर्षक से प्रकाशित किया जाता है।

कृतिबोध : मिशन के कृतिबोध के अन्तर्गत अज्ञात एवं अप्रकाशित पुस्तकों का प्रकाशन का कार्य प्रारम्भ किया है। मिशन द्वारा आयोजित उच्च स्तरीय लिपि शिक्षण कार्यशाला में जिन पाण्डुलिपियों का अध्ययन होता है वो इस शृंखला में प्रकाशित होती हैं।

प्रकाशिका : सन् 2012 में रा.पा.मि. ने प्रकाशिका नाम से एक नई शृंखला की शुरुआत की। इसके तहत दुर्लभ अप्रकाशित पाण्डुलिपियों का प्रकाशन किया जाता है।

फैटेलॉग : मिशन ने फ्रैंकफर्ट पुस्तक मेला में भारतीय पाण्डुलिपियों की प्रदर्शनी सूची प्रकाशित की थी। इन सूचियों में भारतीय पाण्डुलिपियों के कई पहलुओं को स्पर्श किया गया है। यह छः भागों में विभाजित है : मिट्टी से लेकर ताम्र तक जो पाठ अंकित होने वाली विभिन्न आधार सामग्रियों की सूचना देते हैं। “पाण्डुलिपि का निर्माण” भाग में शलाका और दवात के सम्बन्ध में सूचना है। “अध्ययन के क्षेत्र” भाग के अन्तर्गत पाण्डुलिपि से सम्बन्धित विभिन्न क्षेत्रों के सम्बन्ध में सूचनाएं हैं। “अर्चना, समर्पण और पूजा” भाग के अन्तर्गत पावन शब्दों के महत्त्व को दिखाया गया है। पौच्छें भाग में “शब्द और छवि” के अन्तर्गत देश की वित्रित पाण्डुलिपियों की छवि पर प्रकाश डाला गया है। अन्तिम भाग “राजकीय आदेश और सरल रेकॉर्ड” उस तथ्य की ओर संकेत देते हैं कि पाण्डुलिपियाँ राजा से लेकर आम जन के जीवन की अभिन्न अंग थीं।

विज्ञाननिधि : मिशन द्वारा तैयार चुनिन्दा पाण्डुलिपियों के संग्रह को “विज्ञाननिधि” भारत की पाण्डुलिपि निधि” नाम से घोषित किया गया है। इसे 2007 में आयोजित एक समारोह में तत्कालीन पर्यटन और संस्कृति मन्त्री श्रीमती अम्बिका सोनी ने जारी की थी। इसी समारोह में दस लाख पाण्डुलिपियों के डाटाबेस को वेब पर डाला गया था। राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन ने पंजाब अध्ययन राष्ट्रीय संस्थान, नई दिल्ली के साथ मिलकर दुर्लभ गुरु ग्रन्थ साहिब

पाण्डुलिपियों की चित्रित सूची को सबद गुरु के नाम से प्रकाशित किया है।

कैटेलॉग : राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन निम्नानुसार कैटेलॉग का प्रकाशन करता है—

(i) शोध संस्थानों द्वारा उपलब्ध पाण्डुलिपियों का कैटेलॉग।

(ii) विभिन्न संग्रहालयों द्वारा उपलब्ध पाण्डुलिपियों का कैटेलॉग जो कि एक जैसी विषय-वस्तु पर आधारित हों।

2017–2018 में प्रकाशित पुस्तकें

समीक्षिका

वॉल्यूम 11

वेदलक्षण टेक्टस

संपादक :

प्रकाशक : देव पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर्स

प्रकाशिका

1. रसतरंगिनी

संपादक : नीना भवनागरी

प्रकाशक : डॉ. के. प्रिण्टवर्ल्ड प्रा.लि.

2. तक्वीन-अल-बुल्दन

संपादक : मरुद अनवर आलम

प्रकाशक : असीला ऑफसेट प्रिंटर्स

3. रघुवंशम्

संपादक : इंडाला गरुमुर्थी

प्रकाशक : देव पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर्स

4. तेरह मासा

संपादक : अब्दुल हक़

प्रकाशक : असीला ऑफसेट प्रिंटर्स

5. मुन्तखाब-ए-इज़ाद-ए-बिदेली

संपादक : शरीफ हुसैन कासिमी

प्रकाशक : असीला ऑफसेट प्रिंटर्स

6. रियाज-उल-अफ़कार

संपादक : ज़कीरा शरीफ कासिमी

प्रकाशक : असीला ऑफसेट प्रिंटर्स

7. वकाई असद बेग कज़विनी

संपादक : चंदर शेखर

प्रकाशक : दिल्ली किताब घर

8. भैस्मीपरिणय चम्पू

संपादक : शंकर गोपाल नेने

प्रकाशक : न्यू भारतीय बुक कॉर्पोरेशन

9. पूरकली और मरुथुकली

संपादक : के. के. एन. कुरुप

प्रकाशक : न्यू भारतीय बुक कॉर्पोरेशन

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन की समितियाँ

1. राष्ट्रीय अधिकार प्राप्त समिति

अध्यक्ष

संस्कृति मन्त्री, भारत सरकार
पदेन सदस्य

- 1 सचिव, संस्कृति मन्त्रालय
- 2 सदस्य सचिव, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र,
नई दिल्ली
- 3 संयुक्त सचिव, संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार
- 4 महानिदेशक, भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई
दिल्ली
- 5 निदेशक, राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन

मनोनीत सदस्य

- 6 श्री चमू कृष्ण शास्त्री
- 7 डॉ. श्रीनन्दा लक्ष्मण बापत
- 8 डॉ. ललित कुमार त्रिपाठी
- 9 डॉ. योगानन्द
- 10 प्रो. सैयद अली करीम
- 11 डॉ. गोपाल कृष्ण दास
- 12 प्रो. सुदीप कुमार जैन
- 13 डॉ. सुमन जैन

2. कार्यकारी समिति

सचिव

संस्कृति मन्त्रालय

पदेन सदस्य

- 1 सदस्य सचिव, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र,
नई दिल्ली
- 2 संयुक्त सचिव, संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार
- 3 निदेशक, राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन

मनोनीत सदस्य

- 4 श्री चमू कृष्ण शास्त्री
- 5 डॉ. श्रीनन्दा लक्ष्मण बापत

6 डॉ. ललित कुमार त्रिपाठी

7 डॉ. योगानन्द

3. वित्त समिति

वित्तीय सलाहकार, संस्कृति मन्त्रालय की अध्यक्षता में
सदस्य

- 1 वित्तीय सलाहकार, संस्कृति मन्त्रालय, भारत
सरकार
- 2 संयुक्त सचिव, संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार
- 3 निदेशक, वित्त, संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार
- 4 मिशन निदेशक, राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन

4. परियोजना अनुवीक्षण समिति

संयुक्त सचिव, संस्कृति मन्त्रालय की अध्यक्षता में

पदेन सदस्य

- 1 संयुक्त सचिव, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र,
नई दिल्ली
- 2 निदेशक, संस्कृति मन्त्रालय
- 3 निदेशक, राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन – सदस्य
सचिव

मनोनीत सदस्य

- 4 प्रो. चन्द्र शेखर, प्रमुख और समन्वयक (यू.जी.सी.
एस.ए.पी.) पर्षियन विभाग, कला संकाय, दिल्ली
विष्वविद्यालय

- 5 प्रो. संकर गोपाल नेने
- 6 प्रो. पी. के. मिश्रा, कुलपति, नॉर्थ ओडिशा
विष्वविद्यालय, ओडिशा
- 7 डॉ. अनुपम जैन, कुन्द-कुन्द ज्ञानपीठ, इन्दौर
- 8 प्रो. पी. विषालाक्ष्य (रिटायर्ड), डायरेक्टर,
ओरिएण्टल रिसर्च इंस्टीट्यूट, तिरुवनन्तपुरम
- 9 डॉ. योगानन्द

हमारे सहयोगी

पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र (एम.आर.सी.)

पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्रों का विस्तार और सशक्तीकरण

प्रलेखन, सूचीकरण, संग्रहीत तथ्यों का कम्प्यूटरीकरण और लोगों में जागृति पैदा करने हेतु व्यापक नेटवर्क निर्माण करने तथा पाण्डुलिपि के रक्षकों और इस कार्य में संलग्न लोगों को सहायता पहुँचाने के लिए राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन ने सम्पूर्ण देश में विश्वविद्यालयों, प्रख्यात शोध संस्थानों और पाण्डुलिपि सम्बन्धित कार्यों में संशिलित स्थापित गैर-सरकारी संगठनों में पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र स्थापित किए हैं।

पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्रों का संगठन

- प्रत्येक एम.आर.सी. के पास सूचीकरण, सम्पादन और पाठों के अर्थ निकालने में विभिन्न स्तरों के विशेषज्ञता प्राप्त प्रशिक्षित कार्मिकों का एक दल होता है।
- प्रत्येक एम.आर.सी. के प्रशासन और संयोजन का कार्य संस्थान के वर्तमान कर्मचारी में से किसी परियोजना संयोजक द्वारा किया जाता है।
- आँकड़ों की आपूर्ति करने तथा पाण्डुलिपियों के प्रलेखन के लिए एम.आर.सी. के पास दो तरह के कर्मचारी होते हैं – क्षेत्र में तथ्य संग्रहण के कार्य में लगे विद्वान् और मैनुस ग्रन्थावली सॉफ्टवेयर में आँकड़ों की प्रविष्टि करने के लिए कम्प्यूटर प्रविष्टि कार्मिक।
- प्रत्येक एम.आर.सी. में एक कम्प्यूटर, एक प्रिण्टर, इंटरनेट सुविधा, निर्धारित मैनुस ग्रन्थावली सॉफ्टवेयर होते हैं जिसमें पाण्डुलिपि आँकड़े की प्रविष्टि की जाती है और उसे अन्ततः मिशन कार्यालय स्थित राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक डाटाबेस से जोड़ दिया जाता है।
- पाण्डुलिपि शास्त्र और प्राचीन लेखन-शैली पर

कार्यशाला का आयोजन करके पाण्डुलिपि के पाठ के अर्थ निकालने और उनके सम्पादन के लिए संसाधन कार्मिक तैयार किए जाते हैं।

- प्रत्येक एम.आर.सी. को उसकी क्षमता और संतोषजनक कार्य निष्पादन के अनुरूप राशि आबंटित की जाती है।

एम.आर.सी. की गतिविधि

- एम.आर.सी. पाण्डुलिपि सम्बन्धित तथ्य संग्रहण तथा पंजीकरण हेतु पाण्डुलिपि शास्त्र में प्रशिक्षित अध्येताओं और छात्रों को अपने कार्य में शामिल करता है।
- एम.आर.सी. राज्य स्तर पर राष्ट्रीय सर्वेक्षण को पूरा करने में मदद करते हैं।
- एम.आर.सी. पाण्डुलिपियों के व्यक्तिगत तथा संस्थागत अधिपतियों से सम्पर्क स्थापित करता है।
- एम.आर.सी. पाण्डुलिपियों के पठन-पाठन और पाण्डुलिपि शास्त्र तथा पुरातत्व लेखन के अन्य पक्षों के लिए विद्वानों की खोज करता है।
- पाण्डुलिपि विज्ञान तथा प्राचीन लेखन-शैली सम्बन्धित व्याख्यान और राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित करने हेतु एम.आर.सी. राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन को सहयोग करता है।

पाण्डुलिपि सहयोगी केन्द्रों को सहायता

पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्रों के अतिरिक्त, मिशन ने पाण्डुलिपि सहयोगी केन्द्रों का एक नेटवर्क स्थापित किया है। यहाँ हमने प्रलेखन और उनके संग्रहों के सूचीकरण के लिए महत्वपूर्ण पाण्डुलिपि भण्डारों को अपने से सम्बद्ध किया है। उनका कार्य मैनुस ग्रन्थावली सॉफ्टवेयर के माध्यम से मौलिक सूचीकरण करना है जो कि उनके कर्मचारी आनुपातिक आधार

पर स्वयं अथवा बाहर के किसी व्यक्ति या संस्था से करवाते हैं। सन् 2006 से शुरू करके आज तक की समयावधि में मिशन अपने नेटवर्क के अन्तर्गत 43 ऐसे संस्थानों को लाने में सफल रहा है।

विदेशी संग्रहों का प्रलेखन

मिशन विदेश में स्थित पाण्डुलिपि भण्डारों में संग्रहों के प्रलेखन के लिए आधार तैयार करने में सदैव संलग्न रहा है। सन् 2006 में 70 से अधिक संस्थाओं के साथ सम्पर्क स्थापित किया गया था। सात साल के अन्तराल के बाद विभिन्न दक्षिण एशियाई देशों में स्थित भारतीय पाण्डुलिपियों के प्रलेखन हेतु मिशन एक परियोजना को रूप-रेखा देने के लिए दक्षता के साथ समन्वय कार्य कर रहा है। उम्मीद है कि वर्ष 2015–16 में अन्तर्राष्ट्रीय नेटवर्किंग और विदेश में स्थित संग्रहों के प्रलेखन के इस कार्य का राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक डाटाबेस के विस्तार और विशेष दुर्लभ तथा महत्त्वपूर्ण भारतीय पाण्डुलिपियों के सांख्यिकीकरण की दृष्टि से ठोस परिणाम प्राप्त होगा।

रणनीति

- यूरोप, अमरीका और एशिया में भारतीय पाण्डुलिपियों के ज्ञात भण्डार से सम्पर्क स्थापित करना।
- जिस प्रारूप में हमारे पाण्डुलिपि आँकड़े संगृहीत किए जाते हैं उस उचित प्रारूप को भेजना।
- आँकड़ों के कम्प्यूटरीकरण हेतु मैनुस ग्रन्थावली सॉफ्टवेयर भेजना।
- अब तक की गैर-सूचीकृत भारतीय पाण्डुलिपियों के पढ़ने और अर्थ निकालने के लिए भण्डारों को उस क्षेत्र में विद्वानों का पता लगाने में मदद करना।
- जहाँ भारतीय पाण्डुलिपियों की सूची मौजूद हो वहाँ से सूची का संग्रह करना।
- विदेशों में स्थित संग्रहों में उपलब्ध भारतीय पाण्डुलिपियों का सांख्यिकीकरण करना।

पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र एम.सी.सी. का संगठन

- प्रत्येक एम.सी.सी. में पाण्डुलिपि संरक्षण प्रशिक्षित संरक्षकों और विशेषज्ञों का एक दल होता है।
- प्रत्येक एम.सी.सी. में उस संस्थान के वर्तमान में उपलब्ध कर्मचारियों में से एक जो परियोजना संयोजक होता है वह गतिविधियों के प्रशासन और देख-रेख का दायित्व लेता है।
- प्रत्येक एम.सी.सी. में पाण्डुलिपि संरक्षण कार्य करने के लिए आधारभूत सुविधा-युक्त प्रयोगशाला होती है।
- प्रत्येक एम.सी.सी. अनेक संस्थाओं को उनके पास उपलब्ध पाण्डुलिपियों के संरक्षण हेतु अनेक स्तर का प्रशिक्षण देता है।
- प्रत्येक एम.सी.सी. अपने-अपने क्षेत्र में पाण्डुलिपि भण्डार स्वामियों को निवारक एवं उपचारात्मक संरक्षण में प्रशिक्षण देता है।
- एम.सी.सी. में काम करने वाले संरक्षकों के कौशल को बढ़ाने के लिए नियमित रूप से कार्यशालाओं और प्रशिक्षण सत्र का आयोजन किया जाता है।

एम.सी.सी. का कार्य निष्पादन

- सभी एम.सी.सी. में आधारभूत सुविधाओं से युक्त संरक्षण प्रयोगशाला होती है।
- प्रत्येक एम.सी.सी. में सम्बन्धित कर्मचारियों के दल को विभिन्न स्तर की विशेषज्ञता प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।
- एम.सी.सी. के निवारक संरक्षण कार्यक्रम में व्यवस्थित ढंग से बढ़ोतरी की जाती है।
- संरक्षण से सम्बन्धित विषयों में समझ बढ़ाने और देख-रेख के लिए अधिकाधिक संस्थानों के साथ सम्पर्क अभियान चलाया जाता है।
- किसी संस्थान में उपलब्ध आधारभूत सुविधा, अतीत के कार्य और पाण्डुलिपि संकलन और संस्थान में उपचारात्मक संरक्षण कार्य में उसके सहयोग के आधार पर उसे एम.सी.सी. बनाया जाता है।

पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्रों द्वारा किए गए कार्यों का विवरण

राज्य	क्र.सं.	पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र का नाम
आन्ध्र प्रदेश	1.	आन्ध्रप्रदेश राज्य अभिलेखागार और शोध संस्थान तारनाका, हैदराबाद – 7, आन्ध्र प्रदेश
	2.	प्राच्य शोध संस्थान, श्रीवेंकटेश्वर विश्वविद्यालय तिरुपति – 517 502, आन्ध्र प्रदेश
असम	3.	कृष्णकान्त हांडिक पुस्तकालय गुवाहाटी विश्वविद्यालय गुवाहाटी – 781 014, असम
बिहार	4.	पटना संग्रहालय विद्यापति मार्ग, पटना, बिहार
	5.	श्री देव कुमार जैन प्राच्य शोध संस्थान देवाश्रम, महादेव रोड, आरा, बिहार 802 301
दिल्ली	6.	बी.एल. भारतविद्या संस्थान विजय वल्लभ स्मारक परिसर 20 वां कि.मी., जी. टी. करनाल रोड पोस्ट – अलीपुर, दिल्ली – 36
हरियाणा	7.	संस्कृत, पाली एवं प्राकृत विभाग कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र – 136 119
हिमाचल	8.	हिमाचल राज्य संग्रहालय छौरमैदान, शिमला, हिमाचल प्रदेश – 171 004
जम्मू-कश्मीर	9.	केन्द्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान चोगलमसार, लेह (लद्दाख) – 194 001 जम्मू-कश्मीर
कर्नाटक	10.	पाण्डुलिपि शास्त्र विभाग कन्नड विश्वविद्यालय, हम्पी, विद्यारण्य – 583 276 हॉस्पेट तालुक, जिला – बेल्लारी (कर्नाटक)
	11.	आई.एन.टी.ए.सी.एच. चित्रकला परिषद् कला संरक्षण केन्द्र कुमार कृपा मार्ग, बंगलुरु – 560 001

12. केलाडि संग्रहालय एवं ऐतिहासिक शोध संस्थान
पोस्ट – केलाडि, सागर तालुका
जिला – शिमोगा, कर्नाटक
13. राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन एवं शोध संस्थान
श्री धवलतीर्थम्, श्रावणबेलगोला – 571 335
जिला – हसन, कर्नाटक
14. श्री वादिराज शोध फाउण्डेशन
गीता मार्ग, श्री पुथिजे मठ, कार स्ट्रीट
उडुपी, कर्नाटक – 576 101
- केरल 15. प्राच्य शोध संस्थान एवं पाण्डुलिपि पुस्तकालय
केरल विश्वविद्यालय, करियावट्टम
तिरुवनन्तपुरम, केरल – 695 585
16. थुंचन मेमोरियल ट्रस्ट
थुंचन घरंबा, तिरुर
जिला – मामल्लापुरम्, केरल
- मध्यप्रदेश 17. कुन्द-कुन्द ज्ञानपीठ
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, 584 एम.जी. रोड
तुकोगंज, इन्दौर – 452 001, मध्यप्रदेश
- महाराष्ट्र 18. भण्डारकर प्राच्य शोध संस्थान
दक्कन जिमखाना, पुणे – 411 047, महाराष्ट्र
- मणिपुर 19. मणिपुर राज्य अभिलेखागार
कैसामपाट, इम्फाल – 795 001, मणिपुर
- उड़ीसा 20. ए.आइ.टी.आइ.एच.वाई.ए.
प्लाट नं 4 / 330, प्रथम तल, पोस्ट – शिशुपाल गाडा
(निकट गंगुआ पुल, पुरी रोड)
भुवनेश्वर – 2, उड़ीसा
21. आई.एन.टी.ए.सी.एच.
उड़ीसा कला संरक्षण केन्द्र
उड़ीसा राज्य संग्रहालय परिसर
भुवनेश्वर – 751014, उड़ीसा
22. उड़ीसा राज्य संग्रहालय
संग्रहालय भवन, भुवनेश्वर, उड़ीसा
23. संबलपुर विश्वविद्यालय पुस्तकालय
संबलपुर विश्वविद्यालय, बुरला – 768 001

राजस्थान	24.	अकलंक शोध संस्थान अकलंक विद्यालय शोध संस्थान बसंत विहार, कोटा, राजस्थान
	25.	दिगम्बर जैन पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र जैन विद्या संस्थान, दिगम्बर जैन नासिम भट्टारक जी सवाई रामसिंह रोड, जयपुर – 302 004, राजस्थान
त्रिपुरा	26.	त्रिपुरा विश्वविद्यालय सूर्यमणिनगर, त्रिपुरा वेस्ट, त्रिपुरा
उत्तर प्रदेश	27.	केन्द्रीय पुस्तकालय बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस, उत्तर प्रदेश
	28.	आई.सी.आई. रामपुर राजा पुस्तकालय हामिद मंजिल, रामपुर – 244 901, उत्तर प्रदेश
	29.	भारतीय संरक्षण संस्थान परिषद् एच.आइ.जी. – 44, सेक्टर ई, अलीगंज स्कीम लखनऊ
	30.	मजहर मेमोरियल संग्रहालय बहारियाबाद, गाजीपुर, उत्तर प्रदेश
	31.	नागार्जुन बौद्ध फाउण्डेशन 18, अंधियारी बाग गोरखपुर – 273 001, उत्तर प्रदेश
	32.	वृन्दावन शोध संस्थान रमण रेती, वृन्दावन – 281 121, उत्तर प्रदेश
उत्तराखण्ड	33.	हिमालय विरासत समाज एवं कला संरक्षण केन्द्र नैनीताल, उत्तराखण्ड
पश्चिम बंगाल	34.	पाण्डुलिपि पुस्तकालय हार्डिंग भवन, प्रथम तल 87 / 1, कॉलेज स्ट्रीट सीनेट हाउस कलकत्ता विश्वविद्यालय कोलकाता – 700 073, पश्चिम बंगाल

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि भित्ति

॥ विज्ञानमुपास्त ॥

National Mission for Manuscripts

National Mission for Manuscripts

Report of the Fifteenth Year

2017-18

National Mission for Manuscripts

Annual Report 2017-18

National Mission for Manuscripts (NMM) completed precious 11 years of its existence on 7 February 2014. Initially NMM was established in 2003 for a period of five years, and subsequently given extension twice, the latest one in 2012. Year 2013-14 was the second year of the third phase, significant in many ways and indeed a year of intense activity for the NMM.

Set up by the Government of India under the Department of Culture, the Mission has the mandate of identifying, documenting, conserving and making accessible the manuscript heritage of India. We see a national effort in the form of a mission for manuscripts as a logical, radical and urgent response to a very contemporary challenge — of reclaiming the inheritance contained in manuscripts, often in a poor state of preservation.

India can rightfully claim to be the largest repository of manuscripts in the world. It is not only the largest repository of literary heritage, but is also the forerunner in conservation efforts. National Mission for Manuscripts is first such national level comprehensive initiative in the world which caters to the need of conserving

manuscripts and disseminating knowledge contained therein. NMM has covered a long distance since its inception in 2003 towards fulfilling its motto, "conserving the past for the future". It works through a network of more than 100 sub-centres, spread all over the country.

After more than a decade since it was established by the Department of Culture, Government of India, it has emerged as a movement, undoubtedly the most popular and effective among all the heritage conservation initiatives in the country.

In the third phase, the activities of the NMM have expanded manifold. In the past two years, rejuvenated NMM has made adjustments in its priorities to make it more relevant and effective. Commendable among them are: extending NMM network in the north-east and other remote areas and appropriate emphasis on intellectual heritage of the medieval period. From the decade-long experience, it has been felt that survey of manuscripts is the activity which cannot be accomplished in one go. It is a continuous process and can be better handled through permanent institutional set up. Therefore survey of manuscripts

has been entrusted upon the Manuscript Resource Centres (MRCs) which are also made responsible to complete documentation through post-survey activities. The third phase of the NMM started in 2012 with this paradigm shift.

NMM has a two-pronged strategy to conserve manuscripts: (a) preventive and curative conservation of original manuscripts and (b) conservation through digitization and micro-filming.

It is an acknowledged fact that almost half of the total manuscripts reserve in independent India was irretrievably lost before NMM came into being. Therefore, conservation is appropriately accorded top priority in the work plan of the NMM. Besides carrying out conservation through well-equipped centres (MCCs), NMM also conducts conservation workshops to conserve manuscripts and train manpower in the art and science of conservation. In 2011, NMM has revived the dysfunctional conservation laboratory at the head office in New Delhi. At present, four well-trained conservationists (though the number is negligible in comparison to demand) are treating manuscripts on war footing in this laboratory.

The way to applying modern technology for preservation has been defined in

“Guidelines for Digitization of Archival Material” formulated and published by the NMM. It has the primary objective of using digital technology to preserve manuscripts for posterity. After studying the best practices being adopted in digitization projects at national and international level and after long consultation with experts in the field, NMM has come up with this document, which is first of its kind in the country. The aims of digitization effort are to conserve the manuscripts for posterity and to provide easy access to manuscripts by establishing a National Digital Manuscript Library. In 2011 NMM has launched the third phase of its digitization project, which is designed to digitize 8 million pages of manuscripts. Including the first and second phase of digitization, NMM has been able to digitize more than 18 million pages.

NMM is aware of the limitation of digitization as a means of conservation. The digitized copies are convenient for providing accessibility, but in the era of changing technology and as also the limited lifespan of DVDs, digital copies cannot be the medium for long-term preservation. Therefore, NMM has planned to create and keep microfilms of all the digitized copies of manuscripts.

To sum up, the aim of NMM is to retrieve the knowledge contained in manuscripts and ensure its optimum use in the present context. Means to this goal are varied: documentation, conservation, digitization and dissemination.

Seminars and lectures on diverse topics related to manuscripts, manuscriptology and knowledge contained in manuscripts are organized in different parts of the country. In the last few years four volumes containing the lectures delivered under Tattvabodha Public Lecture Series were published. Seven volumes of seminar papers, five volumes of critical editions of manuscripts, seventeen volumes of rare unpublished manuscripts and four catalogues were published. In total, thirty-seven volumes of books have been published so far and a large number of books are under process of publication as well. Besides these, NMM has in its website (www.namami.gov.in) information on 31,23,000 manuscripts. Efforts on dissemination, through lectures, seminars and workshops, etc. have increased manifold during the last two years.

Manuscripts are the store house of knowledge gained in our country over a period of more than 5,000 years. This needs to be fruitfully and gainfully harvested for

application in the present context to restore to India the intellectual respectability it once enjoyed.

Programmes and Activities

I. Documentation

- Enriching National Electronic Database of Manuscripts
- Survey of Manuscripts and Post-Survey Programme
- Expansion and Strengthening of Manuscript Resource Centres (MRCs)
- Supporting Manuscript Partner Centres (MPCs)

II. Manuscript Conservation and Training

- Expansion of MCC network
- Establish Manuscript Conservation Partner Centres (MCPCs)
- Creation of a National Resource Team of Conservators
- Promotion of research programmes
- Preventive conservation training
- Workshops on conservation of rare support materials
- Establishment of field laboratories
- Organizing MCPC workshops
- Conservation of manuscript collections in MRCs
- Collaboration in survey and post-

- survey
- Collaboration with digitization

III. Training on Manuscriptology and Palaeography

- Conducting training courses on manuscriptology and palaeography
- Create trained manpower
- Introducing manuscriptology courses in Indian universities
- Preparation of critical editions of manuscripts

IV. Documentation through Digitization

- Preservation of manuscripts for posterity
- Promotion of access and usage for scholars and researchers, without tampering with original copies
- Creation of a digital library as a resource base of the digitized copies of Indian manuscripts
- Creation of standards and procedures for digitization of manuscripts

V. Research and Publication

- **Tattvabodha:** Compilation of the proceedings of public lectures delivered under Tattvabodha Series
- **Sameekshika:** Compilation of the proceedings of the seminars organized on different topics
- **Samrakshika:** Compilation of the proceedings of the seminars on conservation of manuscripts
- **Kritibodha:** Critical editions of manuscripts
- **Prakashika:** Printed editions of rare and unpublished manuscripts
- **Kriti Rakshana:**

VI. Outreach Programmes

- Organize public lectures
- Organize seminars and workshops on Manuscriptology and Palaeography where old scripts are taught.
- Organize exhibitions, etc. under public awareness programme

Objectives

In suggesting the objectives for the Mission it would be simplistic to suppose that the objective for launching a National Mission for Manuscripts is merely to locate, enumerate, preserve and describe all the Indian manuscripts in India and abroad. The objective for undertaking these tasks is to enhance their access, improve awareness about cultural inheritance and encourage their use for educational and research purposes and lifelong learning. The Development Objective can be broken down into the following five sub-objectives:

Objective 1

To facilitate conservation and preservation of manuscripts through training, awareness and financial support;

Objective 2

To document and catalogue Indian manuscripts, wherever they may be, maintain accurate and updated information about them and the conditions under which they may be consulted;

Objective 3

To promote ready access to these manuscripts through publication, both in book form as well as electronic form;

Objective 4

To boost scholarship and research in the study of Indian language and manuscriptology;

Objective 5

To build up a National Manuscript Library.

Documentation

India's manuscripts are scattered in known and unknown repositories across the country. One of the main programmes of the National Mission for Manuscripts followed by national survey which is the first effort to create and compile a National Database of Indian Manuscripts. As the most significant contribution of the Mission, it is being compiled with information on Indian manuscripts in public and private collections that is gathered through different information collection processes.

When it was established in 2003, one of the challenges before the National Mission for Manuscripts (NMM) was to collect information about the availability of manuscripts, to locate manuscripts and to prepare a national database of manuscripts. It seemed to be challenging considering the fact that unlike developed countries of the West, availability of manuscripts in India is not limited to organized repositories only. Here manuscripts are available in libraries, mathas, temples, mosques as well as in households. Therefore, it is not only the country with largest number of

manuscripts but also the largest number of repositories. From Mizoram to Gujarat and from Leh to Kanyakumari, one may come across manuscripts anywhere. Presumption in this regard is bound to be proved futile.

After establishment, NMM has formulated a detail plan to face this challenge of locating and documenting manuscripts. In its first and second phases of existence, emphasis was given on door to door survey to locate manuscript repositories and detail documentation through Manuscript Resource Centres (MRCs). Simultaneously, under a strategy which is aimed at far-reaching consequences, a network of institutions locating at different corners of the country has been created. The institutional framework has been worked out to entrust upon the responsibility of locating and documenting manuscripts to these institutions. Gradually the network of institutions has started to shoulder the responsibility of documentation with more efficiency and accuracy. As a result the emphasis has shifted and survey activities are carried out through MRCs now. This is a remarkable shift from the policy followed

earlier, though the very seed of the network was sowed just after the beginning of the Mission. In 2013-14, steps have been taken to strengthen the network and make it more comprehensive and effective. As a result, a number of almost inactive MRCs have been rejuvenated and a large number of new MRCs have been established to end the regional imbalance and give the much needed boost up to data collection.

Most of the manuscript wealth of India has not been documented in a manner to provide a common portal for reference to aid scholars and researchers. In many instances, there has been no knowledge of or access to these manuscripts, creating a gap between the knowledge cultures of the past and present.

NMM is engaged in detailed documentation of manuscripts in India, by creating a National Catalogue of Manuscripts. The catalogue containing information about 31,23,000 manuscripts is already available in NMM website, www.namami.gov.in. This electronic catalogue provides information of manuscripts from institutions, religious, cultural and educational, as well as private collections across the country.

Objectives of Documentation

- Location of the unknown manuscript reserves in the country, both in

institutional and private repositories.

- Documentation of the entire estimated ten million manuscripts of the country.
- Reaching out to the grassroots level for gathering information on manuscripts, as well as spreading awareness.
- Creation of the electronic catalogue of manuscripts to be made available on the Internet.

Methodology

- Conducting surveys in each state and union territory, for locating manuscripts in both known and unknown, private and public, catalogued and non-catalogued collections, through the standard questionnaire format.
- Co-ordinating with the state and district administration, as well as local self-governing bodies and general populace at large.
- Gathering data from the manuscript resource centres (MRCs).
- Sorting, checking, organizing and entering the data on the database.
- Promoting the documentation of collections of Indian manuscripts outside India through set questionnaire and manus data forms (yet to be started).

Data Processing

After collection of information, it is entered into the Manus Granthavali software at the manuscript resource centres (MRCs). Finally the data comes to the Mission for checking by scholars who are qualified in various fields of knowledge.

National Electronic Database of Manuscripts

National Electronic Database of manuscripts is the first of its kind online catalogue of Indian manuscripts, emerging out of various earlier attempts at such documentation by different institutions. With information on every manuscript that

has been documented through the Mission's datasheets, the catalogue covers various aspects of manuscripts, from title, commentary, language, script, subject, place of availability, number of pages, illustrations, date of writing, etc. As a consolidated portal, it can be searched through the categories of author, subject, etc.

Apart from sensitizing people about the rich intellectual heritage of India, the Database will provide vital policy impetus for future initiatives to be taken to conserve, preserve, digitize, improve access and save manuscripts for posterity.



Year-wise Data Receiving Record

Financial Year	Year-wise data contribution of MRCs	Total data received
2003-04	0,05,222	0,05,222
2004-05	0,44,172	0,49,394
2005-06	0,10,383	0,59,777
2006-07	6,18,760	6,78,537
2007-08	6,67,116	13,45,653
2008-09	5,46,498	18,92,151
2009-10	3,40,721	22,32,872
2010-11	1,74,866	24,07,738
2011-12	2,59,727	26,67,465
2012-13	1,76,457	28,43,922
2013-14	1,65,788	30,09,710
2014-15	1,77,845	31,87,555
2015-16	1,39,450	33,27,005
2016-17	1,44,977	34,71,982
2017-18	0,82,858	35,54,840



Output Details of Manuscript Resource Centres (MRCs)

Sl. no.	Name of the State	Name & Address of the MRC	2017-18
1	Uttar Pradesh	Akhila Bharatiya Sanskrit Parisad Mahatma Gandhi Marg, Hazaratganj, Lucknow	5,080
2		Mazhar Memorial Museum, Gazipur	14,000
3	Haryana	Kurukshetra University, Kurukshetra, Haryana	4,363
4	Himachal Pradesh	Himachal Academy of Arts Culture & Language Shimla, Himachal Pradesh	11,533
5	J & K	Central Institute of Buddhist Studies, Leh, J & K	3,411
6	Odisha	Sri Jagannath Sanskrit Vishwavidyalaya, Puri, Odisha	2,336
7	West Bengal	Asiatic Society, Kolkata, West Bengal	6,963
8	Bihar	Sri Dev Kumar Jain Oriental Research Institute Devashram, Mahadev Road, Arrah, Bihar	8,320
9		Nava Nalanda Mahavihar Ministry of Culture, Govt. of India, Nalanda, Bihar	4,439
10	Assam	Institute of Tai Studies and Research, Moranhat, Assam	2,506
11	Rajasthan	Sri Sat Shruti Prabhana Trust, Jaipur, Rajasthan	616
12	Madhya Pradesh	Dr. Harisingh Gour University, Sagar Madhya Pradesh	4,500
13	Maharashtra	Bhandarkar Oriental Research Institute, Pune	1,677
14		Shivaji University, Kolhapur, Maharashtra	4,491
15	Tamil Nadu	Government Oriental Manuscript Library Egmore, Chennai, Tamil Nadu	7,001
16	Kerala	Thunchan Memorial Trust, Thunchan Paramba, Dist. Mamalapuram, Kerala	1,622
Total data collected during 2017-2018			82,858
Data Collected during the period 2003-2016			34,71,982
Data Collected from MPCs and other Sources			7,61,707
Grand Total Data			43,16,547

Conservation of Manuscripts

Conservation of cultural property awareness among the people is the concern of all the cultural heritage sector.

For that purpose a standard methodology comprising the positive aspects of both traditional Indian practices and modern scientific methods has been formulated and conservation of cultural property through the promotion of awareness and expertise is a concern shared by all in the cultural heritage sector. The Mission has made over the past fifteen years some definite interventions in this domain.

When NMM was formed in 2003, there were paucity of trained persons. The absence of the standard norms of conservation on the one hand and pitiable conditions of Indian artefacts which demand immediate measures on the other hand.

The National Mission for Manuscripts has made a long way over the past fifteen years with some definite interventions in this field of conservation through its network chain of Manuscript Conservation Centres and Manuscript Conservation Partner Centres. The Mission has been organizing a number of workshops and training programmes across the country to create a national base of

conservation expertise for manuscripts.

NMM is first such national level comprehensive initiative in the world which caters to the need of conserving manuscripts and disseminating knowledge contained therein. One of the important missions for the organization is to protect manuscripts from further decay, damage and prolong its life. The NMM plans to follow the methodology adopted for conservation with storage, reorganization and emergency treatment, with availability of MSS in their surroundings.

Our ancestors had made use of these materials in their day-to-day life and manuscripts are of no exception to those. National Mission for Manuscripts conserving heritage. It works through 50 Manuscripts Conservation Centres (MCC), nearly 300 sub-centres and Manuscripts Conservation Partner Centres (MCPC) spread all over the country. Conservation assistance to these institutions in particular, expert advice on storage and maintenance of their collections is provided by the MCCs in the region. The MCCs also provide preventive and remedial conservation work on the manuscripts.

Any direct action on an undamaged collection of manuscripts is termed as Preventive or Remedial conservation. Conservation is generally carried out in following these steps:

- Documentation
- Original manuscripts
- Digitization
- Microfilming

Objectives of NMM

- Generation of skill and awareness among the holders of manuscripts, institutional and private, as well as in aspiring conservators.
- Provision of financial and material support to institutions and private holders for conservation of manuscripts by conservation workshop.
- Promotion of research and practical-theoretical modules for addressing various aspects in manuscript making and preservation, with a particular focus on indigenous methods.

Methodology

- Preventive workshop of conservation.
- Organizing workshop-cum-seminars on curative conservation, based on available materials, climatic conditions required, etc.

- Creating a National Resource Team of Conservators, as a mobile team for solving conservation issues in various manuscript repositories across the country.
- Increasing the number of institutions within the fold of the Mission's Conservation Centres and the Manuscript Conservation Partner Centres.

Expanded Network of MCCs

The MCCs have been established in various manuscript repositories. In the past fifteen years they have been the core strength of the Mission in promoting conservation practices and training. Each Centre has trained manuscript conservators that provide vital assistance to institutions holding large manuscript in their region.

How MCC Works

- Each MCC has a team of trained conservators.
- The activities of each MCC are administered and coordinated by a Project Coordinator who is generally from academic institution.
- Each MCC has a laboratory with at least basic facilities to undertake manuscript conservation.
- MCCs provide training in preventive and remedial conservation to

custodians of manuscripts all over the country.

- MCCs conduct outreach campaigns to promote knowledge of basic conservation of manuscripts.
- The skills of the conservators working for MCCs are regularly updated with training programme.

Performance Summary of the MCCs

- Basic conservation laboratories established in all MCCs.
- Core team of staff in each MCC created from trained staff in varied levels of expertise.
- Systematic increase in the MCCs.
- Outreach programmes expanded to cover more institutions in providing vital care and understanding of conservation issues.

Manuscript Conservation Partner Centres
Manuscript Conservation Partner Centres (MCPCs) are a set of institutions which has large holdings of manuscripts but not having any conservation facility. The Mission brings them under its national network in order to facilitate and provide assistance to them under this programme.

Creation of a National Resource Team of Conservators

Taking into consideration the extent and

scope of conservation activities taken up for the preservation and conservation of manuscripts, the Mission has launched a programme for creating a National Resource Pool of Conservators. In this programme persons qualified in conservation and trained in practical and theoretical aspect of preventive conservation of manuscripts as per the requirements of NMM. The team of conservators from the pool are sent to undertake the reorganization of storage of the repositories on request and to train their staff in handling of manuscripts.

Promotion of Research Programmes

In 2006-07, the Conservation Department of the Mission took up projects in promoting research in conservation practices. To improve the capacity and quality of advice given to the various institutions and also to develop a deeper understanding of the materials and techniques of manuscript conservation, the Mission had collaborated with the National Research Laboratory for Conservation of Cultural Property (NRLC), Lucknow. NRLC, henceforth, will serve as a research centre for reference and technical queries.

Four research projects were initiated by the Mission in collaboration with NRLC, which have been in the process at the

Regional Research Laboratory for Conservation — a regional branch of NRLC, Lucknow. These research projects primarily aims at:

- The evaluation of various methods of lamination of paper manuscripts and to develop an indigenous method.
- Discovering suitable adhesive paste for the restoration of palm-leaf manuscripts.
- Exploration of the possibilities of methods for mass de-acidification of manuscripts.
- Development of Oxygen Free Chamber to give anoxia to the micro organisms.

Preventive and Curative Conservation Training

Imparting training in preventive and curative conservation of manuscripts is one of the most important objectives of the Mission. With the establishment of the MCC network and organizing 174 workshops on preventive and curative conservation over the past five years, a trained manpower has now been raised to carry out preventive and curative conservation of manuscripts with the result that manuscript storage in a large number of institutions has been scientifically reorganized. From the last year, a broad curriculum for these workshops has been formulated to make them more specific to

local needs. In 2007, fifteen Preventive Conservation Workshops were held in different parts of the country and 200 people had been trained. From the persons so trained, fifty people were selected for the National Resource Team of conservators.

Conservation of Manuscript Collections of MRCs

After the review of the MCCs, members of the Central Team had been deputed to visit various MRCs to assess their conservation needs in a more holistic approach to conservation in which MCCs and MRCs jointly undertake projects. A programme is being developed to provide assistance to the MRCs not only through the MCCs but also by providing the staff with training in basic care and maintenance. The following institutions have conserved their own collections and as well as in other repositories which are as follows: Vrindavan Research Institute, Vrindavan; Oriental Research Institute, Tirupati; Oriental Research Institute, Mysore; Khuda Baksh Oriental Public Library, Patna; Bhandarkar Oriental Research Institute, Pune; Rampur Raza Library, Rampur; Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur; Sarasvati Mahal Library, Thanjavur, etc.

Workshop on Preventive Conservation of Manuscripts 2017-18

Name of the Institution	Date
Chinmay, Kerala	21 to 25 August 2017
State Archive & Research Institute Tarnaka, Hyderabad	9 to 13 October 2017
Dravidian University, Srinivasavanam, Kuppam	23 to 27 October 2017
M.K.S. Institute of Social Science Library, L.N. Mithila University, Kameshwaranagar, Darbhanga, Bihar	14 to 18 November 2017
Intach, Lucknow	20 to 24 November 2017
Tai Studies & Research Moranhat, Assam	6 to 10 November 2017
Bangiya Sahitya Parisad, Kolkata	5 to 9 November 2017
Manipur University, Imphal, Manipur	December 2017

Remedial Training in Conservation

HIMSHACO, Ranibagh, Nanital	10 July to 10 August 2018
INTACH Bhubaneswar	10 August to 9 September 2018



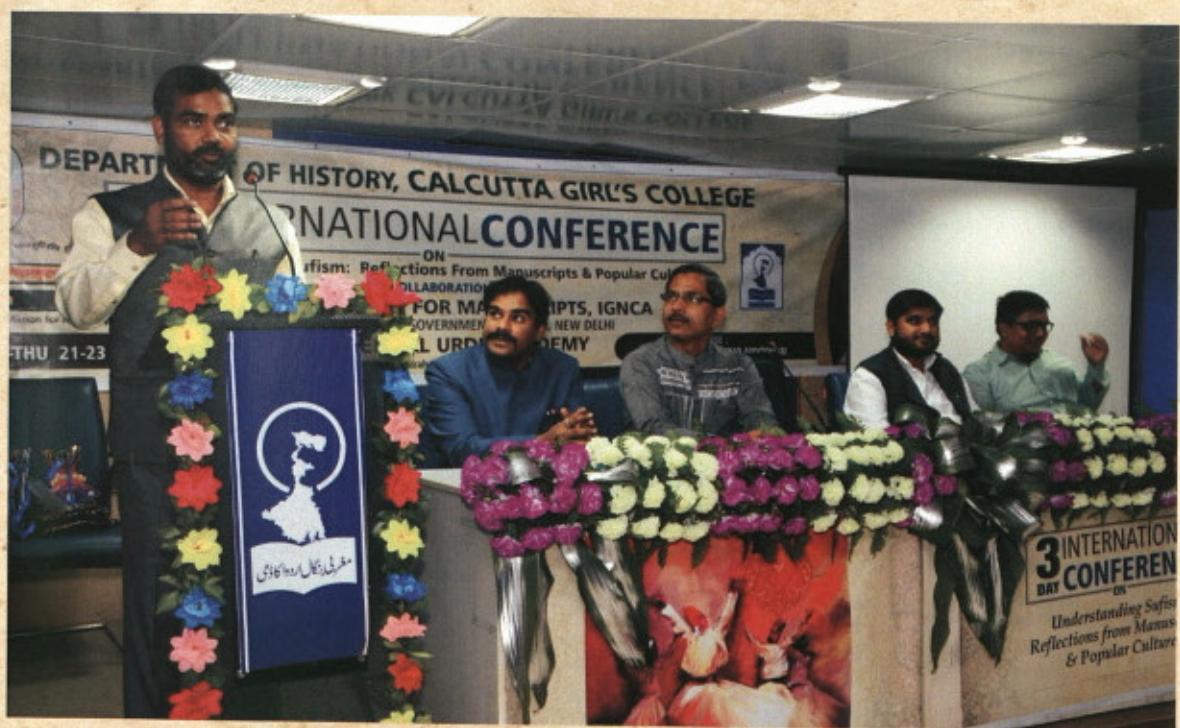
Conservation Activity Report of MCC in 2017-18

State	S. No.	Name of Manuscripts Conservation Centre	Preventive	Curative
			Folios	Folios
Andhra Pradesh	1.	The Director, Oriental Research Institute Sri Venkateswar University, Triupati - 517502	98	12,361
	2.	The Director, Coordinator State Archive and Research Institute, Tarnaka, Hyderabad	88,323	2,597
Bihar	3.	The Director, Shri Dev Kumar Jain Oriental Research Institute, Dev Ashram Mahadeva Road, Ara, Bihar - 802 301	39,570	3,393
	4.	The Director, Patna Museum Vidyapati Marg, Patna, Bihar	1,14,268	1,372
Himachal Pradesh	5.	The Director, Himachal State Museum Chaura Maidan, Shimla	25,035	4,211
Haryana	6.	The Director, Dept. of Sanskrit, Pali & Prakrit J.N. Library, Kurukshetra University Kurukshetra, Haryana	1,33,499	367
Jammu and Kashmir	7.	The Director, Central Institute of Buddhist Studies Choglamesar Leh, Ladakh, J&K - 194 104		1,812
Karnataka	8.	The Director, National Institute of Prakrit Studies and Research, Dist. Hassan Shravanabelagola - 573 135, Karnataka	1,59,420	
	9.	The Director, Sri Vaadiraaja Research Foundation, 2 nd Floor, Geetha Mandir Udupi, Karnataka - 576 101	28,024	9,044
Kerala	10.	The Director, Oriental Research Institute Karyavattom, P.O. Thiruvananthapuram - 695 581	1,85,208	43,630

Madhya Pradesh	11.	The Director, Kund Kund Jananpith Deviahilya University, M.G. Road, Tukogunj, Indore – 462 001(M.P)	37,616	
Maharashtra	12.	Bhandarkar Oriental Research Institute, Pune	48,490	1,195
North East	13.	Dr. Abul Kalam Coordinator Manipur State Archive, Kaisampat Imphal, Manipur – 795001	3,607	280
	14.	The Director, Tripura University Department of History Suryamaninagar, Tripura West	15,065	6,211
Odisha	15.	The Director, Intach ICI Odisha Art Conservation Centre State Museum Premises Bhubaneswar, Odisha - 75104	9,202	1,246
	16.	The Director, AITIHYA Bhubaneswar - 2, Odisha	15,649	7,626
Rajasthan	17.	The Director, Digambar Jain Pandulipi Samrakshan Kendra, Jaipur, Rajasthan - 302 004	47,834	
	18.	The Director, Aklank Shodh Sansthan Aklank Vidyalaya, Kota	5,603	6,172
Uttar Pradesh	19.	The Director, Vrindavan Research Institute Raman Reti Marg, Vrindavan - 281 121	19,099	3,682
	20.	The Director, Nagarjuna Buddhist Foundation Andhiari Bagh, Gorakhpur - 273 001	37,207	

	21.	The Director, Intach Indian Council of Conservation, Lucknow	5,112
	22.	The Director, Central Library Banaras Hindu University, Varanasi	18,663 3,010
	23.	The Director, Mazahar Memorial Museum Bahariabad, Ghazipur, U.P - 275 204	48,529
Uttara- khand	24.	The Director, Himalayan Society for Heritage and art Conservation (HIMSHACO), Rani Bagh, Dist. Nainital	50,298 4,936

The Mission has set up a Manuscript Conservation Laboratory at the Mission headquarters in New Delhi for the preservation of its own collection, with a skeleton infrastructure and facilities required for both preventive and remedial conservation of the manuscripts.



Digitization

Digitization offers important new possibilities, both as a surrogate and in a more limited context, as a preservation technique for archives in the traditional media of paper and parchment. Digital technology opens up a totally new perspective. Digitization means acquiring, converting, storing and providing information in a computer format that is standardized, organized and available on demand from common system. Manuscripts are converted into high quality compressed digital formats with specialized equipment and stored systematically for future reference.

National Mission of Manuscripts (NMM) has the primary objective of using digital technology to preserve the manuscripts for the posterity. With the advancement of information technology, digitization promises documentation and preservation of original texts, facilitating at the same time, greater access for scholars and researchers. In 2004, the Mission had initiated a Pilot Project of Digitization, aiming at digitizing several caches of manuscripts across the country. In 2006, the Pilot Project has been completed, with the Mission setting standards and

guidelines for digitization after studying the best practices being adopted in digitization projects at national and international level (world libraries, museums, etc.). These guidelines for digitization are being followed by the digitization agencies empanelled with NMM for the digitization of manuscripts under the digitization project. The Second and Third Phase of Digitization is successfully completed and the Fourth Phase is near completion. With the fresh digitization projects, the Mission seeks to create a digital resource base for manuscripts.

Objectives of Digitization

1. It is estimated that NMM could cover the digitization of only a very small portion of what is estimated as the vast manuscript wealth of India. It is targeted that at least 25 lakh more important manuscripts shall be digitized in future from repositories across the nation.
2. Promotion of access and usage for scholars and researchers, without tampering with original copies.
3. Establishment of National Digital

Manuscripts Library as a resource base of the digitized copies of some of the significant manuscript collections of the country.

4. Acquiring a state of the art high storage capacity server for storing archival format of the digital manuscripts in order to ensure the preservation of the data for long term and archival purpose.
5. The digital surrogates themselves are subject to decay over a long period of time. Thus, manuscripts can be preserved in the form of microfilms as it has a longer lifespan and is not subjected to uncertainties associated with obsolesce of software and hardware.

Methodology

- Pilot Project in five states across the country covering five caches of manuscripts, in the First Phase of digitization.
- Digitization of 80 lakh manuscripts pages in the Second Phase in important manuscripts in repositories all over the country.
- Digitization of 80 lakh manuscripts pages in the Third Phase in important manuscripts in repositories all over the country.

- Digitization of about 75 lakh manuscripts pages has been done under the Fourth Phase and the work is in progress to complete 1 crore pages in repositories all over the country.
- Targeting, in the Fifth Phase, digitization of another 1 crore pages of manuscripts in repositories all over the country.
- Digitizing catalogues, and the new catalogus catalogorum.
- Creating microfilms from digital images for archival purpose.
- Creation of Digital Manuscripts Library for storage and easy access for research.

Output Specification

There shall be three types of images required to be generated for every page of the manuscripts:

1. Master Image (original uncleaned and uncompressed)
2. Clean Master (cleaned loss less compressed image)
3. PDF-A (derivative lossy image)

The detailed specifications of these images are as follows:

Raw Master Image		Subject Meta-data	As per standards fixed by NMM
(Original Digitized Image)		File Naming	As specified by NMM
File Format	Tiff 6.0 or higher	PDF-A Image	
Compression	Uncompressed	File Format	PDF
Spatial Resolution	300 / 600 dpi, minimum, optical	Compression	Group 4 CCITT lossy compression.
Subject Meta-data	As per standards fixed by NMM	Spatial Resolution	1024 x 768 pixels at 300 dpi
File Naming	As specified by NMM	Subject Meta-data	As per standards fixed by NMM
Clean Master Image (Cleaned Image)		File Naming	As specified by NMM
File Format	Tiff 6.0 or higher		
Compression	Loss less compression		
Spatial Resolution	8" x 10" at 300 dpi		



Digitization 1st Phase (2005 to 2007)

Sr. no.	Name of the Repository	No. of Manuscripts	No. of Pages	State
1	Orissa State Museum, BBSR, Odisha	1,749	3,49,588	Odisha
2	Jain Manuscripts, Lucknow	180	42,951	U.P.
3	Kuttiattam Manuscripts, Kerala	340	38,260	Kerala
4	Oriental Research Library, J&K	10,147	18,24,162	J&K
5	Allama Iqbal Library, J&K	365	97,648	J&K
6	Sri Pratap Singh Library, J&K	74	28,536	J&K
7	Sri Shankardeva Kalakshetra	2,286	1,58,695	Assam
8	Siddha Manuscripts, Chennai	2,069	78,506	Tamil Nadu
Total		17,210	26,18,346	

Digitization 2nd Phase (2007 to 2012)

Sr. no.	Name of the Repository	No. of Manuscripts	No. of Pages	State
1	Krishnakanta Handique Library, Guwahati	2,091	1,56,173	Assam
2	Orissa State Museum, BBSR, Odisha	6,093	14,20,666	Odisha
3	Dr. Harisingh Gour University, Sagar	1,010	1,17,603	M.P.
4	Anandashram Samstha, Pune	7,939	9,21,667	Maharashtra
5	Bharat Itihas Sansodhak Mandal, Pune	4,429	6,60,730	Maharashtra
6	French Institute of Pondicherry	506	1,70,629	Tamil Nadu
7	Institute of Asian Studies, Chennai	481	34,505	Tamil Nadu
8	Kunda-Kunda Jnanapitha, Indore	7,506	11,56,373	M.P.
9	Bhogilal Leharchand Institute of Indology	22,907	10,64,900	Delhi
10	Akhil Bhartiya Sanskrit Parishad, Lucknow	12,887	4,58,376	U.P.
11	Rashtriya Sanskrit Sansthan, Allahabad	1,545	1,65,220	U.P.
12	Himachal Academy, Shimla	225	55,751	H.P.
13	Vrindavan Research Institute	22,375	15,61,864	U.P.
Total		89,994	79,44,457	

Digitization 3rd Phase (2012 to 2014)

Sr. no.	Name of the Repository	No. of Manuscripts	No. of Pages	State
1	Bharat Itihas Samshodhak Mandal, Pune	22,873	14,50,375	Maharashtra
2	Anandashram Samstha, Pune	6,734	3,27,484	Maharashtra
3	Bhandarkar Oriental Research Institute	35	22,679	Maharashtra
4	Rashtriya Sanskrit Sansthan, Allahabad	35,020	25,76,879	U.P.
5	Jamia Hamdard	4,200	10,10,273	Delhi
6	VVBIS, Hosiarpur	1,500	1,14,376	Punjab
7	Orissa State Museum , BBSR, Odisha	3,175	6,03,142	Odisha
8	NMM	562	1,21,329	Delhi
9	Rajasthan Oriental Research Institute	28,813	17,92,864	Rajasthan
Total		1,02,912	80,19,401	

Digitization 4th Phase (2014 to 2018)

Sr. no.	Name of the Repository	No. of Manuscripts	No. of Pages	State
1	Rajasthan Oriental Research Institute, Bharatpur	9,151	5,42,235	Rajasthan
2	Rajasthan Oriental Research Institute, Bikaner	6,158	3,09,502	Rajasthan
3	Rajasthan Oriental Research Institute, Kota	9,716	10,36,252	Rajasthan
4	Rajasthan Oriental Research Institute, Alwar	1,957	3,01,639	Rajasthan
5	Kurukshetra University, Kurukshetra	11,442	7,33,501	Haryana
6	Patna Museum, Bihar	856	1,71,158	Bihar
7	Rashtriya Sanskrit Sansthan, Allahabad	16,382	13,32,629	U.P.
8	BORI (work in progress)	7,553	10,25,646	Maharashtra
9	VORI (work in progress)	23,254	21,23,055	Gujarat
Total		86,469	75,75,617	

National Digital Manuscripts Library

For the first time in history, all the significant literary, artistic, and scientific works of mankind can be digitally preserved and made easily available for our culture, research, education, and appreciation and also for all our future generations. The aim is to setup a Digital Manuscripts Library of India which will foster creativity and easy access to all human knowledge in the form of manuscripts of this country. As a first step in realizing this mission, it is proposed to create the Digital Manuscripts Library with a searchable collection of many valuable manuscripts, predominantly in Indian languages, available at a one place. This digital library will also become an aggregator of all the knowledge and digital contents created by other digital library initiatives in India. Very soon we expect that this library would provide a gateway to Indian Digital Manuscripts Libraries in science, arts, culture, music, traditional medicine, Vedas, Tantras and many more disciplines. The result will be a unique resource accessible to everyone, without regard to socio-economic background or nationality.

NMM in collaboration with NIC has developed a user-friendly web application for entering meta-data online and

accessing the manuscripts details through a dedicated search engine. The meta-data will be uploaded in the cloud server along with the digital images to be interlinked for providing easy access to digital manuscripts for a wide public to be used for research and study of various subjects. NMM has developed software taking into account the diversity of scripts, material on which they are written and subjects to which they refer. Such software would enable efficient management of data about custodial institutions, descriptive catalogues, subject directories, preservation status of manuscripts and for accessing the digital images through the search engine and incorporating the same in the digital library. It is being planned to set up a state of the art Digital Manuscript Library at New Delhi with the capacity for ten users initially (to be expanded up to 100 users) to facilitate access to this knowledge base. Users are expected to access data from a Data Centre through desktop PCs. New data is expected to be added to the storage servers on a daily basis. It is also required that the Data Centre adhere to international standards of data storage, redundancy, uptime, and availability.

Digitization to Microfilming

NMM has collected around 2.61 crore of digital images of valuable manuscripts and

the process is continuing. For long-term storage the images need to be converted in the microfilm form. This will prove beneficial for the security of the data in long run for many centuries (more than 500 years). It is useful to save the data from physical damage. The microfilming will be beneficial for archival of the digital data which can be kept safe in relatively lesser space and may be used by generations to come.

NMM aims to make an archive of the digital data which can be used for centuries by the users for accessing the desired information from manuscripts. At present, microfilming is the only feasible media for archival of the data for the longest period of time. It is the only standard accepted worldwide for archival.

Future Plans

1. Identifying rare manuscripts with the help of experts in the various fields of the study of manuscripts.
2. The high definition images of the rare illustrated manuscripts to be blown

up, framed and displayed in a dedicated area to be setup for visitors.

3. Digitized manuscripts to be translated and edited to form an e-book which will have searchable content to facilitate ease of reference to the scholars.
4. Digitized manuscripts in brittle and incomplete condition will be studied by the scholars to postulate the missing portions in an order to complete the missing texts.
5. The institutions which have worked upon digitization of manuscripts to be contacted for accessing copy of the digital manuscripts images so that the same can be merged in the NMM's digital library in order to centralize the digital data of the country at a single source.
6. Attempts shall be made to collaborate with the institutions in the rest of the world for acquiring the digital manuscripts of Indian origin available with them.

Outreach Programmes

The NMM seeks not merely to locate, catalogue and preserve India's manuscripts, but to enhance access, spread awareness and encourage use of the knowledge content therein for educational purposes.

The Mission seeks to bring the several facets of knowledge contained in manuscripts to the public through lectures, seminars, publications and specially designed programmes for school children and university students.

We have a series of lectures titled "Tattvabodha" in which we invite scholars representing different intellectual disciplines to share their thoughts with the public at large. The primary aim of this series is to bring the most eminent scholars of Indian knowledge systems to a forum where they can present their ideas and interact with

interested members of the public. We have instituted this as a monthly lecture series in Delhi, and also in other parts of the country, wherever possible. In the course of this series, we were honoured to have most eminent scholars in the field of Indology, especially manuscript studies. So far, this has been a successful programme and we are also publishing the papers presented with the permission of the speakers.

The objectives of the outreach programmes are:

- Creation of a platform for discussion, debate and critical engagement with manuscripts,
- Promotion of awareness and understanding of the manuscript heritage of India,
- Generation of interest, awareness and knowledge of the manuscripts among the general populace.

EXHIBITION 2017-18

Sl.no.	Name of the Institute	Theme	Date
1.	Visakha Book Fair, Visakhapatnam, A.P.	Book Fair	1 to 10 December 2017
2.	National Mission for Manuscripts in collaboration with NBT, New Delhi	Environment	6 to 14 January 2018
3	Manuscripts Exhibition at Puri, Odisha	पुरा लिपि प्रदर्शनी	25 to 27 May 2018

Survey of Manuscripts

The National Mission for Manuscripts is a unique project in its programme and mandate and engaged since 2003 to unearth and preserve the vast manuscript wealth of India. India possesses an estimate of ten million manuscripts, probably the largest collection in the world out of which about 43 lakh are located and documented. These cover a variety of themes, textures and aesthetics, scripts, languages, calligraphies, illuminations and illustrations. Together, they constitute the "memory" of India's history, heritage and thought. These manuscripts lie scattered across the country as well as beyond the boundary, in numerous institutions and private collections, often unattended and undocumented.

To locate manuscript repositories the Mission runs two types of survey programmes such as: for the survey of different Indian states – (A) National Survey and for the survey of foreign repositories to locate Indian manuscripts, (B) Foreign Survey.

A. National Survey

National Survey of Manuscripts is an intensive statewide programme that aims to locate every manuscript/manuscript repository in the country. All institutions,

private collections of manuscripts in every district, town and village of the country are brought under the purview of the National Survey. As per the decision of Executive Committee of the Mission on 13 June 2018, National Survey of Manuscripts is merged with the activities of the Documentation. Henceforth, this work will be done by the existing MRCs of the country.

B. Foreign Survey

The Executive Committee of the Mission has decided in the meeting held on 12 June 2014 to survey and document Indian manuscripts in the repositories of all the SAARC countries (Afghanistan, Pakistan, Nepal, Bhutan, Bangladesh, Maldives & Sri Lanka) along with China, Japan, Germany, United Kingdom, Russia and United States. Accordingly the Mission requested to the Indian High Commissioners of the above-stated countries requesting to suitable counterparts in their concern countries as well as to provide lists of Indian manuscript repositories. Response from three countries, i.e. Maldives, United States and United Kingdom have been received in the financial year 2016-17. As desired by the Member Secretary, IGNCA

proposal regarding survey of manuscripts in Vietnam and Thailand has been approved in principle by the executive Committee of the Mission on 13 June 2018.

Documentation of Manuscripts

Documentation of Manuscripts takes place followed by Survey in a state through establishing different Manuscript Resource Centres (MRCs) and Manuscript Partner Centres (MPCs). During this process Documenters of different MRCs and MPCs of the Mission visit the repositories of manuscripts located through survey programme and document them. After collection of information, they are entered into the computer through Manus

Granthavali software at the Manuscript Resource Centres (MRCs) or Manuscripts Partner Centres (MPCs) and finally come to the Mission for checking by qualified scholars in various fields of knowledge. With the information on every manuscripts those have been documented through a prescribed Manus data sheet Mission developed the world's largest National Electronic Database. The catalogue covers various aspects of manuscripts such as title, commentary, language, scrip, subject, place of availability, number of pages, illustrations, date of writing, etc. As a consolidated portal, it can be searched through the categories of author, subject, etc.

Basic Level Workshop of Manuscriptology & Palaeography: 2017-18

Sl. No.	Name of the Institute	Scripts	No. of persons trained	Date
1.	Rashtriya Sanskrit Sansthan Kangra, Himachal Pradesh	Brahmi, Sharada, and Tankari	30	25 August to 14 September 2017
2.	Kachchh University Kuchha, Gujarat	Brahmi, Sharada, Grantha and old Devanagari	26	15 August to 7 September 2017
3.	Jain Vishva Bharati Institute Ladnun, Rajasthan	Brahmi, Sharada, Grantha and old Devanagari	62	25 November to 15 December 2017
4.	Gauhati University, Guwahati, Assam (NE)	Brahmi, Gadgayan, and Kaitheli	35	Yet to be organize

5. B.N. Mandal University, Madhepura, Bihar	Brahmi Kaithi, and Maithili	30	Yet to be organize
6. Dravidian University Kupam, Andhra Pradesh	Brahmi and Grantha	33	Yet to be organize

Advanced Level Workshop of Manuscriptology & Palaeography: 2017-18

Sl. No.	Name of the Institute	Scripts	No. of persons trained	Date
1.	Sarasvati-MRC Bhadrak, Odisha	Brahmi Odia, and Karani	30	25 February- 27 March 2018
2.	TRIBILS, Nashik, Maharashtra	Brahmi, Modi, Sharada and Grantha	30	Yet to be organize
3.	Govt. Kamalanagar College, Kamalanagar, Mizoram (NE)	Brahmi, Chakma	25	Yet to be organize
4.	Chinmaya International Sodha Sansthan, Ernakulam, Kerala	Brahmi, Sharada, and Grantha	35	Yet to be organize



NATIONAL SEMINARS: 2017-18

Sl. No	Name of the Institute	Title of the Seminar	No. of Participants	Date
1.	Calcutta Girls' College, Kolkata, West Bengal	Understanding Sufism: Reflections from Manuscripts & Popular Culture	30	21-23 November 2017
2.	Rashtriya Sanskrit Vidyapeetha, Tirupati, A.P.	Unpublished Scientific Manuscripts in Sanskrit	30	27-29 November 2017
3.	P.G. Dept. of Sanskrit, Utkal University Bhubneswar, Odisha	Contribution of Odisha to Sanskrit Manuscripts: 1801-1950	30	25-27 December 2017
4.	Dept. of Mizo, Mizoram University (NE) Aizawl, Mizoram	Writing in Mizo & Manuscripts	15	1-3 November 2017
5.	Nava Nalanda Mahavihara (MoC, Govt. of India) Nalanda, Bihar	Manuscripts of Bihar Enrich the Asian Buddhism	32	23-25 September 2017
6.	Dept. of Panjabi, Trinity College, Jalandhar, Punjab	A Study of Manuscripts: Punjabi Literature and History	25	7-9 November 2017
7	Govt. Sanskrit College (NE) Samdong, Sikkim	Unpublished Manuscripts in North East Region	25	10 to 12 May 2018
8	Dept of Telugu University of Madras, Chennai, Tamil Nadu	Telugu Manuscripts in Other Regions	30	27 to 29 April 2018
9	GOMLRC, Chennai, Tamil Nadu	Tattvavatayam of Sri Ramanuja Acharya	30	Yet to be organize
10	Dept of Research, Sri Venkateswar University, Tirupati, A.P.	Sastra in South India Language & Scripts	30	Yet to be organize

Tattvabodha 2017-18

Sl. Name of the Institute	Title of the Seminar	Speaker	Date
1 Nagarjuna Buddhist Foundation, Gorakhpur	The Buddhist Sanskrit Language and Its Usage in the Mahayana Canonical Literature	Prof. S. K. Pathak	12 February 2018
2 Post Graduate Dept. of Odia, Berhampur University Odisha	Palm Leaf manuscripts of Odisha: Its Collection, Preservation and Publication	Prof. Surendra Nath Dash	18 August 2017
3 Government Sanskrit College, Gangtok, Sikkim (NE)	Shabdabodha Prakiya	Prof. Bishnupad Mahapatra	13 March 2018
4 Dadhibaman San. Mahavidyalaya, Kural, Odisha	उत्कलानां पाण्डुलिपि परम्परा इति विजयोपरि आलोचना	Prof. S. N. Diskshita	7 November 2017
5 Purana Darbar Dehradun, Uttrakhand	उत्तराखण्ड की पाण्डुलिपि धरोहर और उनकी विषेषताएं	Prof. Devendra Kumar Singh	30 March 2018
6 Rashtriya Sanskrit Vidyapeeth Tirupati, A.P.	Unpublished Manuscripts in SCSVMV mss Library	Prof. Sankaranarayanan	Yet to be organize
7 BT College Madanapalli, Andhra Pradesh	Contribution of Mahakavi Vemana for Telugu Shathaka Literature	Prof. Rachapalam Chandrasekhar Reddy	Yet to be organize
8 K.K.H. Govt. Sanskrit College Gauhati, Assam (NE).	Vaishnava Manuscripts	Dr. Sadananda	Yet to be organize
9 University Central Library, Bhagalpur, Bihar	Manuscripts: Reservoir of Traditional Knowledge of Ancient India	Dr. D.K. Sing	Yet to be organize

Publications

Under five heads — *Tattvabodha*, *Samrakṣikā*, *Samīkṣikā*, *Kṛtibodha*, and *Prakāśikā* — NMM publishes relevant contents based on their emphasis and criticality, unearthing hitherto unknown manuscripts, critical editions, seminar papers, etc. Numerous volumes have been published so far under these series.

Tattvabodha Since January 2005, NMM conducts monthly seminars under this banner at various institutions across the country. This forum for intellectual debate and discussion gives avenue for eminent scholars to present different aspects of Indian knowledge systems.

***Samrakṣikā*:** NMM organizes seminars conservation of manuscripts at national level. The papers presented in these seminars have been published.

***Samīkṣikā*:** This series has publications as proceedings of research-oriented seminar papers on a particular theme, conducted all over India.

***Kṛtibodha*:** NMM conducts three-weeks Basic Level and five-weeks Advance Level workshops on Manuscriptology and

Palaeography. These workshops teach the participants to read and write old scripts. Under this series NMM publishes the manuscripts which are deciphered during advance level workshop.

***Prakāśikā*:** Under this series, NMM publishes rare and so far unpublished manuscripts in three formats:

1. Facsimile (single copy manuscript)
2. Critical edition with annotation
3. Critical edition with annotation and translation.

Seventeen volumes have been published under this series, so far.

Before the starting of this series, *Kṛtibodha* series used to publish critically edited texts.

***Catalogues*:** NMM publishes catalogues:

- (i) Catalogue of manuscripts available in institutions.
- (ii) Catalogue of manuscripts of different repositories which follow a common theme.

Books Published in 2017-18

PRAKASHIKA

Rasatarangini

Editor: Nina Bhavnagar

Publisher: D. K. Printworld (P) Ltd.

Taqweem-al-Buldan

Editor: Masud Anwar Alam

Publisher: Asila Offset Printer

Raghuvanasamu

Editor: Endala Gurumurthy

Publisher: Dev Publishers & Distributors

Terah Masa

Editor: Abdul Haq

Publisher: Asila Offset Printers

Muntakhab-e-Ijad-e-Bideli

Editor: Sharif Husain Qasemi

Publisher: Asila Offset Printers

Riyaz-ul-Afkar

Editor: Zakira Sharif Qasemi

Publisher: Asila Offset Printers

Waqai' Asad Beg Qazvini

Editor: Chander Shekhar

Publisher: Dilli Kitab Ghar

Bhaismiparinaya Champu

Editor: Shankar Gopal Nene

Publisher: New Bharatiya Book Corp.

Poorakkali and Maruthukali

Editor: K.K.N. Kurup

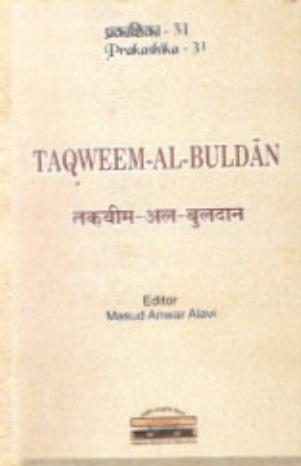
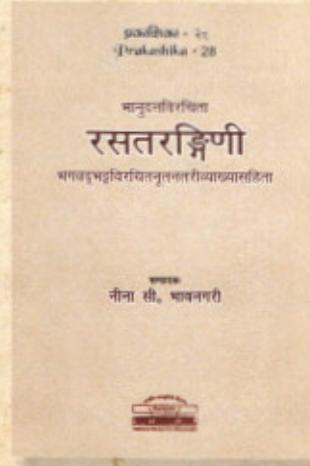
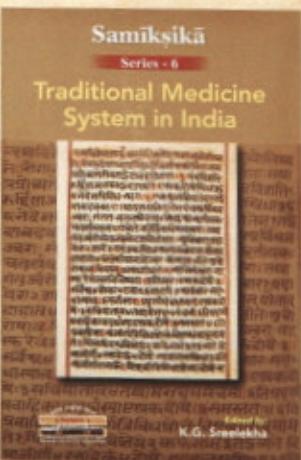
Publisher: New Bharatiya Book Corp.

SAMIKSHIKA

Volume 11: Vedalakshana Texts

Editor: K.G. Sreelekha

Publisher: Dev Publishers & Distributors



Committees Governing the National Mission for Manuscripts

National Empowered Committee

Chairperson

Minister, Ministry of Culture, Government of India

Official Members

1. Secretary, Ministry of Culture, Government of India
2. Member Secretary, IGNCA, New Delhi
3. Joint Secretary, Ministry of Culture, Government of India
4. Director General, National Archives of India, New Delhi
5. Director, National Mission for Manuscripts — Member Secretary

Non-Official Members

6. Chamu Krishna Shastry
7. Dr. Shreenanda Lakshman Bapat
8. Dr. Lalit Kumar Tripathi
9. Dr. Yogananda
10. Prof. Syed Ali Karim
11. Dr. Gopal Krishna Dash
12. Prof. Sudeep Kumar Jain
13. Dr. Suman Jain

Executive Committee

Chairman

Secretary, Ministry of Culture, Govt. of India

Official Members

1. Member Secretary, IGNCA, New Delhi
2. Joint Secretary, Ministry of Culture, Government of India
3. Mission Director, National Mission for Manuscripts — Member Secretary

Non-Official Members

4. Chamu Krishna Shastry
5. Dr. Shreenanda Lakshman Bapat
6. Dr. Lalit Kumar Tripathi
7. Dr. Yogananda

Finance Committee

Chairman

Financial Adviser, Ministry of Culture

Members

1. Member Secretary, IGNCA, New Delhi
2. Joint Secretary, Ministry of Culture, Government of India
3. Director, Finance, Ministry of Culture, Government of India
4. Director, National Mission for Manuscripts — Member Secretary

Project Monitoring Committee

Chairman

Joint Secretary, Ministry of Culture, GoI

Official Members

1. Joint Secretary, IGNCA
2. Director, Ministry of Culture, GoI
3. Mission Director, National Mission for Manuscripts—Member Secretary

Non-Official Members

4. Prof. Chander Shekhar, Head & Coordinator (USC SAP), Department

of Persian, Faculty of arts, University of Delhi

5. Prof. Sankar Gopal Nene
6. Prof. P. K. Mishra, Vice-chancellor, North Odisha University, Odisha
7. Dr. Anupam Jain, Kunda Kunda Jnanapitha, Indore
8. Prof. P. Vishalakshy, (Retd.) Director, Oriental Research Institute, Thiruvananthapuram
9. Dr. Yogananda



Our Partners

Manuscript Resource Centres (MRCs)

To create an extensive network for documentation, cataloguing, data entry and awareness among the people and to assist the keepers and stakeholders of manuscripts, the Mission has set up Manuscript Resource Centres (MRCs) across the country in universities, renowned research institutions and established non-governmental organizations engaged in work relating to manuscripts.

Organization of the MRCs

- Each MRC has a core team of personnel trained in various levels of cataloguing, editing and deciphering scripts.
- The activities of each MRC are administered and coordinated by a Project Coordinator from the existing staff of the Institution.
- To source the data through documentation of manuscripts, two types of personnel work with the MRC — scholars engaged in the field for documenting and the computer entry personnel to enter data in the Manus Granthavali software.
- To set up a Manuscript Resource Centre equipped with one computer and a

printer with internet facilities and the prescribed Manus Granthavali software where manuscript data is entered for eventual integration into the National Electronic Database of Manuscripts at the Mission Office.

- To find resource persons to decipher and edit manuscripts through organizing workshops on manuscriptology and palaeography.
- The funds for each MRC are disbursed according to its capacity and satisfactory output.

Activities of MRCs

- The MRCs engage trained researchers and students in the field of Manuscript documentation and cataloguing.
- MRC help in the National Surveys at the State level.
- MRCs create network with private and institutional manuscript custodians.
- MRCs find scholars to decipher manuscripts and teach scripts and other aspects of manuscriptology and palaeography.
- MRCs coordinate with the NMM office in Delhi to organize public lectures and

national seminars related to manuscriptology and palaeography.

Supporting Manuscript Partner Centres

Apart from the Manuscript Resource Centres, the Mission in the past years has created a network of Manuscript Partner Centres. Here we have been associated with important manuscript repositories for the documentation and cataloguing of their own collections. Their work involves basic cataloguing through Manus Granthavali software done by their own staff on a pro-rata basis or by outsourcing the task. Since 2006 to till date, the Mission was able to bring 78 such institutions within its network, including active and inactive MRCs.

Documentation of Collections Abroad

The Mission had been preparing the ground for the documentation of Indian manuscripts in the repositories abroad. Mission has been in the process of drawing up a project for coordinating with several foreign countries including all SAARC nations, to document Indian manuscripts. It is expected that in 2015-16, this exercise in international networking and documentation of collections abroad will begin to yield tangible results in terms of the expansion of the National Electronic Database and the digitization of particularly rare and valuable Indian manuscripts.

Strategy

- Establishing contact with known repositories of Indian manuscripts in Europe, UK, USA and Asian countries.
- Taking help of the Indian Embassies in foreign countries who can provide communication details of suitable counterparts and locate scholars in their areas who can read and decipher as yet uncatalogued Indian manuscripts.

Manuscript Conservation Centres (MCCs)

Organization of the MCCs

- Each MCC has a team of trained conservators and specialists in the field of manuscript conservation.
- The activities of each MCC are administered and coordinated by a Project Coordinator from the existing staff of the Institution.
- Each MCC has a laboratory with at least basic facilities to undertake manuscript conservation.
- Each MCC assists a number of institutions in varying degrees to provide basic preventive conservation care for their manuscript collections.
- Each MCC provides training in preventive and curative conservation to custodians of manuscripts in the concerned areas.

- MCCs conduct outreach campaigns to promote knowledge of basic conservation of manuscripts.
- The skills of the conservators working for MCCs are regularly updated with workshops and training sessions.

Performance Summary of the MCCs

- Basic conservation laboratories are established in all MCCs.
- Core team of staff in each MCC created from trained staff in varied levels of

experties.

- Systematic increase in the preventive conservation drives of the MCCs.
- Outreach programmed expanded to cover more institutions in providing vital care and understanding of conservation issues.
- MCCs identified on the basis of their infrastructure, past performance and expertise to provide curative assistance to collections and institutions.

List of MCCs which have contributed to the output in 2017-18

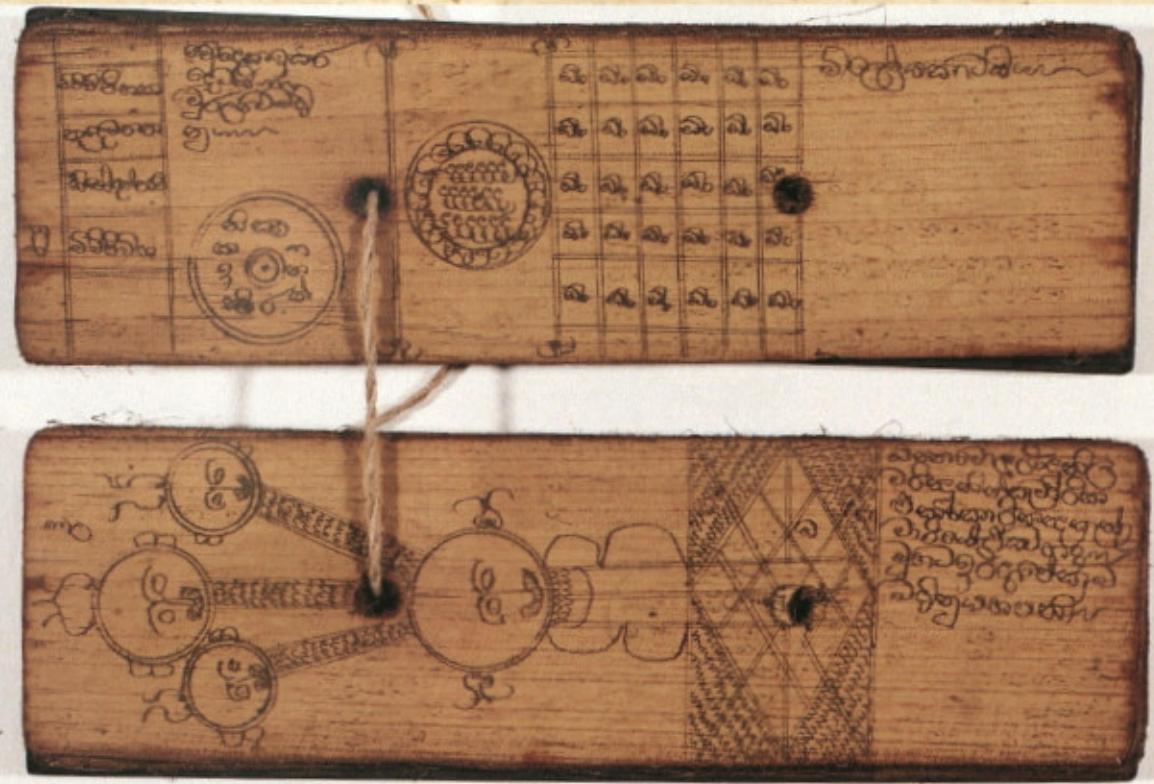
State	Sl. No.	Name of the MCCs
Andhra Pradesh	1.	AP State Archives and Research Institute Tarnaka, Hyderabad – 7, Andhra Pradesh
	2.	Oriental Research Institute Sri Venkateswara University Tirupati – 517507, Andhra Pradesh
Assam	3.	Krishna Kanta Handique Library Gauhati University, Gopinath Bardolai Nagar, Guwahati – 781014, Assam
Bihar	4.	Patna Museum, Vidyapati Marg Patna, Bihar
	5.	Sri Dev Kumar Jain Oriental Research Institute, Devashram, Mahadeva Road Ara – 802301, Bihar

- | | | |
|-----------------|-----|---|
| Delhi | 6. | B.L. Institute of Indology
Vijay Vallab Smarak Complex
20 th KM, GTK Road, P.O. Alipur,
Delhi-3 |
| Gujarat | 7. | Lalbhai Dalpatbhai Institute of
Indology Navarangpur, Near Gujarat
University, Ahmedabad - 380 009,
Gujarat |
| Haryana | 8. | Dept. of Sanskrit, Pali & Prakrit
Kurukshetra University
Kurukshetra, Haryana |
| Jammu & Kashmir | 9. | Central Institute of Buddhist Studies
Choglamsar, Leh (Ladakh) - 194104
Jammu & Kashmir |
| Karnataka | 10. | Department of Manuscriptology
Kannada University
Hampi Vidyaranya - 583 276
Dist. Bellary, Karnataka |
| | 11. | ICKPAC, INTACH Chitrakala
Parishath Art Conservation Centre
Kumara Krupa Road
Bengaluru - 560 001, Karnataka |
| | 12. | Keladi Museum & Historical Research,
P.O. Keladi, Sagar Tq, Dist. - Simoga
Karnataka - 577 401 |
| | 13. | National Institute of Prakrit Studies
and Research; Shri Davala Teertham
Shravanabelagola, Dist. - Hassan |

- Kerala
14. Sri Vadiraja Research Foundation
Geeta Mandir, Sri Puthige Matha
Car Street, Udupi, Karnataka – 576101
15. Oriental Research Institute &
Manuscripts Library
University of Kerala, Kariavattom
Thiruvananthapuram – 695585, Kerala
16. Thunchan Memorial Trust
Thunchan Parambu, Tirur – 676 101
Dist. - Malappuram, Kerala
- Madhya Pradesh
17. Kund Kund Jananpith
Devi Ahilya University, 584,
M.G. Road, Tukoganj, Indore – 452 001
- Maharashtra
18. Bhandarkar Oriental Research Institute
Deccan Gymkhana
Pune – 411 037, Maharashtra
- Manipur
19. Manipur State Archives
Kaishampat, Imphal – 795 001,
Manipur
- Odisha
20. AITIHYA
Plot No. 4/330, 1st Floor
P.O. Sisupala Gada (Near Gangua
Bridge, Puri Road), Bhubaneswar – 2,
Odisha
21. INTACH ICI
Orissa Art Conservation Centre
Orissa State Museum Premises
Bhubaneswar – 751014, Odisha

- | | | |
|---------------|-----|---|
| | 22. | Orissa State Museum
Bhubaneswar, Odisha |
| | 23. | Sambalpur University Library
Sambalpur University
Burla – 768001, Odisha |
| Rajasthan | 24. | Aklank Shodh Sansthan
Aklank Vidyalaya Association
Basant Vihar, Kota, Rajasthan |
| | 25. | Digambar Jain Pandulipi Samrakshan
Kendra, Jain Vidya Samsthan
Digambar Jain Nasim Bhattacharji
Sawai Ramsing Road, Jaipur – 302004
Rajasthan |
| Tripura | 26. | Tripura University
Suryamaninagar, Tripura West,
Tripura |
| Uttar Pradesh | 27. | Central Library
Banaras Hindu University
Varanasi, Uttar Pradesh |
| | 28. | ICI Conservation Centre
Rampur Raza Library, Hamid Manzil
Rampur – 244901, Uttar Pradesh |
| | 29. | Indian Council of Conservation
Institutes
HIG-44, Sector E, Aliganj Scheme
Lucknow – 226024, Uttar Pradesh |
| | 30. | Mazahar Memorial Museum
Bahariabad, Ghazipur, Uttar Pradesh |

31. Nagarjuna Buddhist Foundation
18, Andhiari Bagh,
Gorakhpur – 273001, Uttar Pradesh
32. Vrindavan Research Institute
Raman Reti, Vrindavan – 281121
Uttar Pradesh
- Uttarakhand**
33. Himalayan Society of Heritage & Art
Conservation Centre
Nainital, Uttarakhand
- West Bengal**
34. Manuscript Library
Hardinge Building, 1st Floor
Senate House, 87/1, College Street
University of Calcutta
Kolkata – 700073, West Bengal



Publications of the NMM

TATTVABODHA

Compilation of the proceedings of public lectures delivered under Tattvabodha Series

TATTVABODHA VOLUME I

Editor: Sudha Gopalakrishnan
Co-publisher: Munshiram Manoharlal Publishers Pvt. Ltd.

Pages: 164
Price: ₹ 325

TATTVABODHA VOLUME II

Editor: Kalyan Kumar Chakravarty
Co-publisher: Munshiram Manoharlal Publishers Pvt. Ltd.

Pages: 194
Price: ₹ 350

TATTVABODHA VOLUME III

Editor: Prof. Dipti S. Tripathi
Co-publisher: Dev Publishers & Distributors

Pages: 240
Price: ₹ 350

TATTVABODHA VOLUME IV

Editor: Prof. Dipti S. Tripathi
Co-publisher: D. K. Printworld (P) Ltd.
Pages: 251
Price: ₹ 400

TATTVABODHA VOLUME V

Editor: Prof. V. Srinivas
Co-publisher: D. K. Printworld (P) Ltd.
Pages: 251
Price: ₹ 400

SAMRAKSHIKA

Compilation of the proceedings of the seminars on conservation of manuscripts

SAMRAKSHIKA VOLUME I

Indigenous Methods of Manuscript Preservation

Editor: Sudha Gopalakrishnan
Volume Editor: Anupam Sah
Co-publisher: D.K. Printworld (P) Ltd.
Pages: 253
Price: ₹ 350

SAMRAKSHIKA VOLUME II

Rare Support Materials for Manuscripts and their Conservation

Editor: Shri K.K. Gupta
Co-publisher: Dev Publishers & Distributors

Pages: 102
Price: ₹ 200

SAMIKSHIKA

Compilation of the proceedings of the seminars organized on different topics

SAMIKSHIKA VOLUME I

Buddhist Literary Heritage in India

Editor: Prof. Ratna Basu

Co-publisher: Munshiram Manoharlal Publishers Pvt. Ltd.

Pages: 158

Price: ₹ 325

SAMIKSHIKA VOLUME II

Text and Variations of the Mahabharata

Editor: Kalyan Kumar Chakravarty

Co-publisher: Munshiram Manoharlal Publishers (P) Ltd.

Pages: 335

Price: ₹ 500

SAMIKSHIKA VOLUME III

Natyashastra and the Indian Dramatic Tradition

Editor: Radhavallabh Tripathi

General Editor: Dipti S. Tripathi

Co-publisher: Dev Publishers & Distributors

Pages: 344

Price: ₹ 450

SAMIKSHIKA VOLUME IV

Indian Textual Heritage (Persian, Arabic and Urdu)

Editor: Prof. Chander Shekhar

Co-publisher: Dilli Kitab Ghar, Delhi

Pages: 400

Price: ₹ 350

SAMIKSHIKA VOLUME V

Saving India's Medical Manuscripts

Editor: G.G. Gangadharan

General Editor: Dipti S. Tripathi

Co-publisher: Dev Publishers & Distributors

Pages: 260

Price: ₹ 350

KRITIBODHA

Critical editions of manuscripts

KRITIBODHA VOLUME I

Vadhula Grihyagamavrittirahasyam of Narayana Misra

Critically edited by: Braj Bihari Chaubey

General editor: Sudha Gopalakrishnan

Co-publisher: D.K. Printworld (P) Ltd.

Pages: 472

Price: ₹ 550

KRITIBODHA VOLUME II

Srauta Prayogakalpti of Acarya Sivaśroṇa

Editor: Braj Bihari Chaubey

Co-publisher: D.K. Printworld (P) Ltd.

Pages: 200

Price: ₹ 250

KRITIBODHA VOLUME III

Tattvanusandhanam (A Compendium of Advaita Philosophy) by Sri Mahadeva-nanda Sarasvati

Consultant Editor: T. V. Sathyanarayana
General Editor: Dipti S. Tripathi
Co-publisher: New Bharatiya Book Corp.
Pages: 90
Price: ₹ 150

KRITIBODHA VOLUME IV

Śrījonārājakṛta Kirātārjunīyatikā
Editor: Dharmendra Kumar Bhatt
Consultant Editor: Vasant Kumar M. Bhat
General Editor: Dipti S. Tripathi
Co-publisher: Nag Publishers, New Delhi
Pages: 338
Price: ₹ 250

KRITIBODHA VOLUME V

Dravyagunashatashloki of Trimalla-
bhatta
Editors: C.M. Neelakandhan & S.A.S.
Sarma
General Editor: Dipti S. Tripathi
Co-publisher: Nag Publishers, Delhi
Pages: 136
Price: ₹ 250

PRAKASHIKA

Printed editions of rare and unpublished
manuscripts

PRAKASHIKA VOLUME I

Diwanzādah
Editor: Abdul Haq
General Editor: Dipti S. Tripathi
Co-publisher: Dilli Kitab Ghar, Delhi
Pages: 454

Price: ₹ 250

PRAKASHIKA VOLUME II

Chahar Gulshan (An Eighteenth-century
Gazetteer of Mughal India)

Edited and Annotated by: Chander
Shekhar
General Editor: Dipti S. Tripathi
Co-publisher: Dilli Kitab Ghar, Delhi
Pages: 473
Price: ₹ 250

PRAKASHIKA VOLUME III

Akhyatavada and Nanvada along with
Tippani

Critically Edited by: Sanjit Kumar
Sadhukhan
General Editor: Dipti S. Tripathi
Co-publisher: Dev Publishers &
Distributors

Pages: 127

Price: ₹ 250

PRAKASHIKA VOLUME IV

Pakṣṭācintāmaṇi and Sāmānyaniryukti of
Gaṅgeśa with Kanādaṭippanī (Text
and English Translation)

Critically Edited by: Subuddhi Charan
Goswami
General Editor: Dipti S. Tripathi
Co-publisher: Dev Publishers &
Distributors
Pages: 113
Price: ₹ 225

PRAKASHIKA VOLUME V

Vādhūlagṛhyasūtram with Vṛtti
Critically Edited by: Braj Bihari Chaudhary
General Editor: Dipti S. Tripathi
Co-publisher: New Bharatiya Book Corp.
Pages: 262

PRAKASHIKA VOLUME VI (Part I & II)

Tazkira-e-Illahi of Mir Imaduddin Illahi
Hamdani (Facsimile Edition)
Editor: Abdul Haq
General Editor: Dipti S. Tripathi
Co-publisher: Dev Publishers &
Distributors
Pages: 436 + 347 = 783
Price: ₹ 2,000 (for two parts)

PRAKASHIKA VOLUME VII

Ragarnavam (with Ragacandrika
Vyakhyā)
Edited and commented by: Bhagavat-
sharan Shukla
General Editor: Dipti S. Tripathi
Co-publisher: D.K. Printworld (P.) Ltd.
Pages: 251
Price: ₹ 300

PRAKASHIKA VOLUME VIII

Kalikālasarvajña Ācārya Hemacandra's
Laghvarhannīti (Text with comment-
ary, variant readings, Hindi trans-
lation and appendices)
Editor: Ashok Kumar Singh
General Editor: Dipti S. Tripathi

Co-publisher: New Bharatiya Book Corp.

Pages: 314

PRAKASHIKA VOLUME IX (1st Part)

Mir'at-ullstelah of Anand Ram Mukhlis
Editors: Chander Shekhar, Hamidreza
Ghelichkani & Houman Yousefdahi
General Editor: Dipti S. Tripathi
Co-publisher: Dilli Kitab Ghar, Delhi
Pages: 566
Price: ₹ 400

PRAKASHIKA VOLUME IX (2nd Part)

Mir'at-ullstelah of Anand Ram Mukhlis
Editors: Chander Shekhar, Hamidreza
Ghelichkani & Houman Yousefdahi
General Editor: Dipti S. Tripathi
Co-publisher: Dilli Kitab Ghar, Delhi
Pages: 403
Price: ₹ 400

PRAKASHIKA VOLUME X

Abhijnanasakuntalam with Sandharbh-
dipika of Chandrasekhar Chakravarty
Editor: Vasantkumar M. Bhatt
General Editor: Dipti S. Tripathi
Co-publisher: New Bhartiya Book Corp.
Pages: 262
Price: ₹ 300

PRAKASHIKA, VOLUME XI (Part 1 & 2)

Jaiminiyasamavedasamhita Text of
Kerala Tradition (Arcika, Sama and
Candrasama Portions)
Editor: K.A. Rabindran

General Editor: Dipti S. Tripathi
Co-publisher: Nag Publishers, Delhi
Pages: 206 + 413 = 619
Price: ₹ 600 (for two parts)

PRAKASHIKA, VOLUME XII

Sanskrit Manuscripts of Kuttamatt Family of Kasargod

Editor: K.N. Kurup & P. Manoharan
General Editor: Dipti S. Tripathi
Co-publisher: New Bharatiya Book Corp.
Pages: 279

PRAKASHIKA, VOLUME XIV

Acarya Aryadasapranita Kalpagamasam-grahakhya Vādhūlaśrautsūtravyākhyā
Editor: Braj Bihari Chaubey
General Editor: Dipti S. Tripathi
Co-publisher: Dev Publishers & Distributors
Pages: 300 + 429 = 729
Price: ₹ 650 (for two parts)

CATALOGUES

THE WORD IS SACRED SACRED IS THE WORD — The Indian Manuscript Tradition

By: B.N. Goswamy
Co-publisher: Niyogi Offset Pvt. Ltd., New Delhi
Pages: 248
Price: ₹ 1850

VIJNANANIDHI: MANUSCRIPT TREASURES OF INDIA

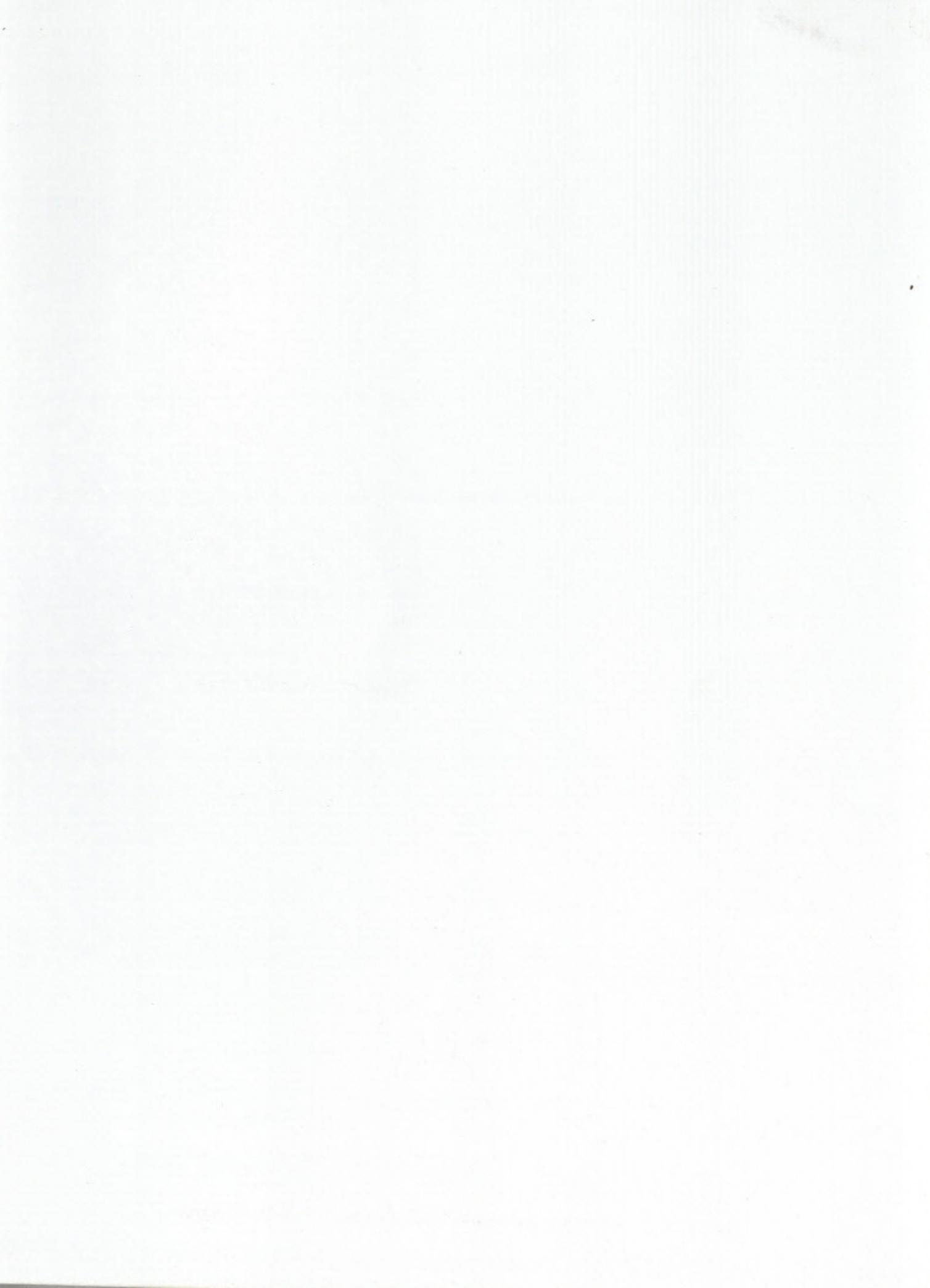
Published by: NMM, New Delhi
Pages: 144

SHABAD GURU: Illustrated Catalogue of Rare Guru Granth Sahib Manuscripts

Editor: Mohinder Singh
Co-publisher: National Institute of Punjab Studies, New Delhi
Pages: 193

DESCRIPTIVE CATALOGUE OF PERSIAN TRANSLATIONS OF INDIAN WORKS

Editor: Sherif Husain Qasemi
General Editor: Dipti S. Tripathi
Publishers: NMM & Asila Offset Printers, New Delhi
Pages: 310
Price: ₹ 500





National Mission for Manuscripts

The Director
National Mission for Manuscripts
11, Mansingh Road, New Delhi - 110 001
Tel.: +91-11-2338 3894; Fax: +91-11-2307 3340
Email: director.namami@nic.in
Website: www.namami.gov.in